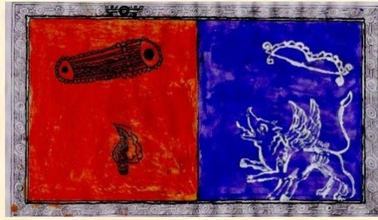
ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯: 𑓒𑓓𑓓 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒹𑒣𑓂𑒙𑒹𑒧𑓂𑒥𑒩 𑓒𑓐𑓑𑓗 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓐 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓑𑓗 𑒁𑓀𑒏 𑓒𑓓𑓓)

(𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 www.videha.co.in)

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢: 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒃-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏: 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩



𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒁𑓀𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑓑 𑒂 𑓑𑓕 𑒞𑒱𑒟𑒱𑒏𑒹𑒿 www.videha.co.in 𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।



समानान्तर धनश्यामाद्

विद्यापति- *चित्र विद्वत सम्मानसँ सम्मानित श्री धनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअण खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ। *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः [illegible] [illegible]।)*

मान थ्यायेक कंगु ग्रन्थ निमालं कुऽ ख्याल्पव (*गद्य-पद्य कंगु*) थंव जं नं बाक्रल जुया तं थ्व त्रिभुवनकंगु स्वलम थ्यावय कीतिकंगु लम्ही कुना यसवता।

अनुक्रम

थ्व संक्रम थवि:-

𑓑.𑓑.𑒛𑒰. 𑒫𑒱𑒣𑒱𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰- 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒦𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒲𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒧𑒰𑒢𑒰𑒙𑒏𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 (𑒦𑒰𑒑-𑓑) (𑒣𑒵. 𑓔-𑓙)

𑓑.𑓒.𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑓖𑒧 𑒐𑒹𑒣 (𑒣𑒵. 𑓙-𑓑𑓓)

𑓑.𑓓.𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒗𑒰 "𑒣𑒫𑒢"- 𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒢𑒫𑒰𑒠𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒧𑒰𑒿 𑒠𑒨𑒠𑒏𑓂𑒭 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 (𑒣𑒵.𑓑𑓔-𑓑𑓕)

𑓑.𑓔.𑒩𑒰𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒖𑒢𑒏𑒣𑒳𑒩𑒲- 𑒏𑒟𑒰𑒢𑒏 (𑒣𑒵. 𑓑𑓕-𑓑𑓕)

𑓑.𑓕.𑒢𑒫𑒢𑒰𑒟 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒱𑒨𑒰 "𑒢𑒫𑒪"- 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒥𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰 (𑒣𑒵. 𑓑𑓖-𑓑𑓗)

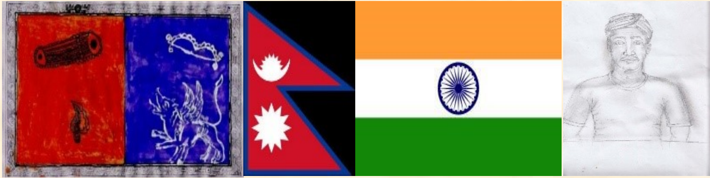
𑓑.𑓖.𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣- 𑓓 𑒙𑒰 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰 (𑒣𑒵. 𑓑𑓘-𑓓𑓑)

𑓑.𑓗.𑒢𑓀𑒠 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒮𑒱𑓀𑒯- 𑒥𑒲𑒧𑒏 𑒐𑒼𑒖 (𑒣𑒵. 𑓓𑓒-𑓓𑓖)

𑓑.𑓘.𑒬𑒱𑒫 𑒬𑓀𑒏𑒩- 𑒏𑒟𑒰- 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 (𑒣𑒵. 𑓓𑓗-𑓓𑓘)

३. संस्कृत दृश्य (पृ. १-१३)

३.१. नाटिका- वयस्यमादित्यनन्दो विलासः (द्वितीयाङ्कवासः) (पृ.१२-१३)



𑓑.𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨/ [illegible] 𑓙𑓗𑓗 [illegible] [illegible]

𑓑.𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨- 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

𑓒.[illegible] 𑓙𑓗𑓗 [illegible] [illegible]

गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय



गजेन्द्र ठाकुर

१

साहित्य अकादेमी, दिल्लीक मैथिली लिप्यन्तरी परामर्शमण्डल

पूर्व अंकमे हम प्रस्तावक तहत साहित्य अकादेमी मैथिलीक नूतन परामर्शमण्डल (साहित्य अकादेमीक नवनिर्वाचित तथाकथित मैथिली लिप्यन्तरी परामर्शमण्डल)कँ गठन लिस्टसँ देना केलक आ तीन वर्ष धरि लिप्यन्तरी परामर्शमण्डल काज करत। सुशासन अन्तर्गत मैथिली साहित्यक मूल धाराक 'बाप नाम सत'क प्रावधानक अंतिम घटना घटल आ बदल गेल।

प्रेषकक लिस्ट:-

1. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P.C. Banerjee Road, Allahabad-211 002;

2. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag,

Darbhanga-846 004;

3. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001;

4. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007;

5. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004;

6. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

[illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒧𑒴𑒪 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 '𑒢𑒰𑒧 𑒢𑒰𑒧 [illegible]'𑒏 [illegible]"।

(1)The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, Professors' Colony, Digahi West Opp. of Primary School,Darbhanga-846 004, (Bihar)

2) The Secretary, Chetna Samiti, Vidhya Pati Bhavan, Vidyapati Marg, Patna-800 001 (Bihar)

3) The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6B,

Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007, (West Bengal)

4) The Secretary, Vidhya Pati Sewa Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004, (Bihar)

5) The Secretary, Anand, Samajik Sanskritik Sahityik Manch, Rajkumarganj (Mirzapur Chowk), Darbhanga-846 004, (Bihar)

6) The General Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, Roseberi 5032, Sahara Garden City, Adityapur-2 Jamshedpur-831 014, (Jharkhand)

7) The General Secretary, Akhil Bharatiya Mithila Sangh, G-6, Hans Bhavan, Wing 2 I.T.O., Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (Delhi)

[illegible]

ई सभटा प्रकरण हमर संगोष्ठी पाही A Parallel History of Maithili Literature मे सम्मिलित कएल जा रहल अछि।

९

कथा प्रकरणक नाम्न-भूमिका

हिन्दीमे मेलाबंगक व्याकरण समीक्षक श्री. माहन लालबहादुर मूल धातुक व्याकरणाचार्यलोकनिसँ सम्बोधित कऽ कहने छथि- 'मैथिलीमे व्याकरण किए ने अछि? की हम सभ जे ज्ञानक ने छी जे हमरा सभकेँ मैथिलीमे अपन व्याकरण नहिये?'

मुदा मूल धारा हिन्दी आ संस्कृतक व्याकरणमे सिखबी लगा कऽ आ ई संबोधित कऽ छ- हिन्दीमे 'हम' 'बहुवचन' लागैत मुदा मैथिलीमे 'एकवचन'- अपन भाषाक प्रकृति मानैत अछि। मुदा समालोचक धातुक गोविन्दाचार्यजी जे तकरा आँकड़ा व्याकरणक विरुद्ध मुद्रा व्याकरणक निर्माण कएलन्हि, से वाचिनि जकाँ हिनकाक स्वतन्त्रताक प्रवृत्तिक कहबा सहज भेल अछि।

जेना संस्कृतमे दक्षिण भारतक 'नीर' आ उत्तर भारतक 'जल' दुनू पानि लेल प्रयुक्त होइछ आ सम्पूर्ण संस्कृत जेँ अहाँ दक्षिण भारतीयसँ 'अहम नीरं पिवामि' सिखेबै आ उत्तर भारतीयसँ 'अहम जलं पिवामि' तँ नीक सामान्य कहबै याकि ने..?

𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨- 𑒛𑓀. 𑒥𑒰𑒪 𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 '𑒗𑒰' 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒑𑒼𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰𑒏𑒹𑒿 *𑒢𑒫𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒩𑒝 𑒫𑒰𑒏𑓂𑒨-𑒣𑓂𑒩𑒏𑒩𑒝* (𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒏𑒩𑒝) 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑓒

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒖𑒲𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒣𑓀𑒑𑒳𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒹𑒧𑒲 𑒧𑒴𑒪 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑓒𑓐𑓑𑓔 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒍 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒄 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑓒𑓐𑓐𑓙 𑒧𑒹 𑒄-𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒂 𑒥𑒰𑒠 𑒄 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯-𑒮𑒠𑒹𑒯 𑓒𑓑 𑒧𑒹। 𑒂𑒥 𑒄 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱।

४. ग्रंथ ७३७ पर टिप्पणी

डॉ कीर्तिनाथ झा

प्रिय गजेन्द्र जी,

अत्यंत विपरीत परिस्थिति मे रहैत [illegible] मे अहाँक सफलता अत्यंत प्रेरक अछि। अहाँक ई अवदान सामान अछैक अहिनाक संग साथ बनल रहौ।

ढेरीक शुभकामनाक संग,

सादर

[illegible] झा (एम.बी.ए., एन.एम.आइ.एम.एस., मुम्बई)

नीक लगैत अछि। आदरणीय अनचिन्हारक [illegible] गजलक बहुत नीक अछि।

४.१.शिव कुमार- कथा- पाहुन

४.२आशीष अनचिन्हार- यमकक लेल देखू कतेक गजलक संदर्भ

४.३निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग- १)



निर्मला कर्ण (१९६०), पिता - राम झा, नैहर - दराजपुर,दरभंगा, सासुर - सोनिम्मानी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग सं बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँऽ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

अग्नि शिखा (भाग - १)

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण/ मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

परवर्ती सम्राट दुर्योधन अपन बापक सिंहासन पर आसीन भेलाह । कुरुवंशक सब सभासद सभा अपन-अपन आसन पर विद्यमान छला। दुर्योधन के मुख पर चिंता के लकीर स्पष्ट

[illegible]

जुड़ल छलैक। धार प्रवाह प्रबल बाढ़क आतंक अधीन भऽ जुड़ल छल। ठहरु आत आतंक कएउतली सात नहि रोक सकलाह। आहि लालच राज्य एवं विजय प्राप्त कनाठ़ सतत आसमान नहि छल।

मन्त्री गण सँऽ विस्तृत सलाह कऽ राजा अपन प्रधानमन्त्री एवं राज्य-भार सौंप चललनि आ स्वयं हिमवान पर्वत पर दिशा सं भगवान विष्णु के तपस्या करबा हेतु प्रस्थान कयलनि,कठोर तऽ बाद सन्तुष्टिमान विष्णु सऽ हुनका आहि सत दिव्यास्त्रक प्राप्ति भऽ सकैत छलनि,जकर सहायता सऽ आ शिलाक एवं विजय प्राप्त कय सकैत छलाह। मुदा शिलाक-विजय हुनक उद्देश्य नहि छल,आ सात भ-मण्डलक निश्चयक भागक वरऽ चाहैत छलाह।

सत राजा चिन्ता के परित्याग कऽ युधिष्ठिरा हिमालय पर्वतक श्री-शोभा देखैत आगू बढ़ल जाइत छलाह। मार्ग मे आ हिमालय सँऽ निःसृत प्रवाह जल सऽ परिपूर्ण गंभीर वेग सऽ प्रवाहित होइत अत्यन्त मनोहारिणी वेत्रावती नदी के देखलनि। आहि मे अनेकानेक अप्सरा आ गंधर्व जल-क्रीडा करैत छल। दूरस्थ ठाढ़ तपस्वी सबहक आश्रम बनल छल। ठाढ़ वृक्ष आ फलक विशाल वृक्ष सँऽ आ आश्रम सुशोभित छल। मुदा राजा के मान आ वृक्ष साहित नहि कऽ सकल। आ आहि स्थान पर नहि ठहरलाह,सुन्दर वृक्षावली देखैत आ आगू बढ़ैत गेलाह।

आब धवल-शीत वर्ण मँऽ युक्त हिमवान पर्वत श्रेणी हुनक नजरिक परिधि मे आश्रम लागल छल । ओ स्थान अनेक नदीक प्रवाह मँऽ युक्त छल । नदीक कलकल निनाद मँऽ गुंजित छल ओ स्थान । श्वेत बादलक झुण्ड धारण कयने श्वेत वर्ण मऽ आच्छादित ओ पर्वत तल मे इन्द्रधनुष सन अनेकों वर्ण क बिम्बन छल । पर्वतक घाटी मे सूर्य देव नुका-छिपी खेलैत छलाह । कतहु अनेकों विद्याधर क्रीडा मग्न छलाह तऽ कतहु किन्नरक गान लागल छल । कतहु-कतहु गंधर्व आ अप्सराक संगीत-नृत्य लागल छल । आदि सनातन वृक्ष क स्पर्श करैत सुगंधित वायु बहैत रहलाह ।
अचक्का जाहि स्थान पर बाघ सिंह क चाल-ढाल देखैत रहलैक । आनन्दित निर्भय मृग मे अनेकों गाय-बकरी क चरैत रहलैक आ । आदि काल दू-तीन खोह बिच बड़ा क भूमि कालिमासित आ रहलैक ।
बाघ क तुलना मे आबि गेलनि आदि जगह पर अनेक कना महर्षिकआश्रम लागत । जाक बिच बड़ा मऽ तुलना पर हुनका स्मृत ललनि जतय महर्षि भृगु कँ आश्रम अछि । बाघ आतंकित पहरबाक निर्भय कलैक । आश्रम प्रांत मे महर्षि भृगु बाघ क अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक स्वागत कलनि तत्पश्चात हुनक जतय आसनादि उद्दम्य पुछलन्हि ।
बाघक पहिल उद्देश्य जानि प्रसन्न तऽ हुनका निकटमे अवस्थित जाहि गुफा क अवलोकन करौलन्हि । ओ गुफा मालती लता मँऽ आच्छादित छल ।
अन्दर माणिक,मूँगा,मुक्ता,चाँदी इत्यादिक भंडार छल । मणि क कांति मँऽ ओ विवर प्रकाश युक्त छल । जगहि मे जाहि वस्तुक

पुष्करिणी सरोवर सँ निर्मल जल आ कमल दल मेँऽ परिपूर्ण छल। राजा पुण्डरीक महर्षि भृगु क आश्रम मेऽ ओतहि तपस्या करबाक निश्चय कएलैन।
ओ अपन आहार क परित्याग कऽ देलनि। बाक साँस पर रहि भऽ भगवान विष्णु क ध्यान लगाओल आ तपस्या मे लीन भऽ गेलाह। बहुत दिन धरि आ आदि मुद्रा मे तपस्या करैत रहलाह। तपस्या क अंतिम चरण मे स्वर्ग सँऽ आएल अप्सरा सभक हुनका विघ्न उपस्थित कएल गेल। सामान्य मनुष्य भऽ आदि मे काम कऽ अपन जन्म सँऽ भटकि जाइत अछि,मुदा पुण्डरीक सँ जखनि धरि ब्रह्मचारी छलाह,हुनका पर कोनो असर नहि पड़लनि। अप्सरा सभक विभिन्न प्रकार सँ अश्लील चेष्टा देख कऽ आ मनस्वी करैत रहलाह। गंधर्व आ अप्सराक मोहन क्रिया क सेहो साँझ बंद कऽ देलक,मधुर गीत क आवाज पर कोनो ध्यान नहि देल। जखनि हुनका सभक स्वर्ग कएल गेल सभ प्रयास विफल भऽ गेलनि,तखन सभ गंधर्व आ अप्सरा हारि-थाकि कऽ समीपस्थ भगवान विष्णुक मूर्ति क पूजा अर्चन कए आतऽ स नायक स्वर्गलोक प्रस्थान कएलक।
राजाक शरीर आब मात्र अस्थि क ढाँचा बनि गेल छल,तखना हुनका अपन शरीरक सुधि नहि छलैन्ह। हुनका कठिन तपस्या सँऽ भगवान विष्णु प्रसन्न भऽ गेलाह,आ अपन चतुर्भुज स्वरूप मे राजा क समक्ष प्रकट भऽ गेलाह।
"वत्स! अपन आँखि खोलु, हम तोहँ सँऽ अत्यंत प्रसन्न छिऐहुँ" - कहि आवाज सुनि अनायास हुनक नेत्र कमल खुजि गेल। सम्मुख वाती मे भगवान विष्णु क स्तुति करबऽ लगलाह आ। भगवान

विष्णु कहलखिन -

" हम अहाँक मनोरथ बुझि गेल छी,अहाँ के किछु बाजि कऽ बतबै के आवश्यकता नहि । अहाँक मनोरथ पूरा होयत । अहाँ त्रिलोकक सौन्दर्य प्राप्त करब । सभ देवता के जीतऽ के सामर्थ्य अहाँ मे होयत । अहाँ संपूर्ण भूमंडल के अधिपति बनब । अहाँक जीवन मे सभ किछु अलग आश्चर्यजनक होयत,जे सामान्य पुरुष मे नहि भऽ सकै । अहाँक अर्द्धांगिनी कन्या सामान्य रमणी नहि होयत,बल्कि अप्सरा मे श्रेष्ठ अप्सरा अहाँक पत्नी स्वरूपा बनत"|

भगवान विष्णुक गंभीर वाणी किछु क्षण तक गुंजित भेल । ध्यान हुनक छी विशद महिमा वाणी विलुप्त भय गेल । आजु कहलहुँ भऽ रस वातावरण सौंदर्य बान भव्यताक प्रतिमूर्ति भऽ गेलाह ।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.१.डा. बिपिन कुमार झा- महाकवि भास प्रणीत कर्णभारम् मैथिली अनुवाद (भाग-१)

महाकवि बाण प्रणीत कादम्बरीक मैथिली अनुवाद
(तृतीय प्रभाग)



डॉ. विपिन कुमार झा

(संस्थापक आ सम्पादक- जाह्नवी संस्कृत ई-शोधपत्रिका)

(जाहि सँ पूर्व महाकवि बाण कृत लिखल कादम्बरी ई कथाक मनोहारिता पर लिखल गेल प्राचीनतम रचना अछि, संस्कृत सँ लिखल जाहि ग्रन्थक आदि स्रोत विलुप्त तक अध्ययन करैत ओतय महाकवि कथा अपन मानसी सँ निबद्धन करैत छवि ओतय अद्भुत छवि आतङ्क दमन वर्ष कें लय पूर्ण जातावत धनिक मैथिली संस्थानक यजमान करी अहाँ सब शास्त्र आदि सँ जायू)

कथा: -- अथानुदय,

कथा: अथ ! कु काला,

𑒬𑒨𑓂𑒨𑒰𑒬𑒨𑒢𑒮𑓂𑒟𑒫𑒱𑒢𑒱𑒣𑒰𑒞𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰𑒮𑒧𑒰𑒑𑒞-

𑒮𑒾𑒡𑒰𑒑𑓂𑒩𑒫𑒰𑒞𑒰𑒨𑒢𑒦𑒫𑒢𑒹𑒭𑒳 𑒧𑒠𑒰𑒪𑒮𑒹𑒭𑒳 ।

𑒏𑒳𑒬𑒰𑒮𑒢𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒧𑒢𑒱𑒩𑓂𑒑𑒧𑒱𑒞𑒼 𑒧𑒧𑒰𑒣𑒱

𑒢𑒻𑒬𑓂𑒫𑒩𑓂𑒨𑒧𑒰𑒣𑒞𑒞𑒱 𑒣𑒞𑒮𑒱 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏𑒰𑒩 ॥ 𑓖॥

𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒣𑒳𑒩 𑒧𑒹 𑒕𑒪 𑒋𑒏 𑒧𑒿 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒞𑒯𑒰 𑒣𑒩 𑒖𑒏𑒩 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒞𑒰 𑒁𑒢𑓀 𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒒𑓂𑒩, 𑒮𑒱𑓀𑒯, 𑒥𑒰𑒒, 𑒬𑒹𑒩 𑒂𑒠𑒱 𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏𑓄 𑒮𑓂𑒫-𑒮𑓂𑒫 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒠𑒪 𑒖𑒏𑒩𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒏𑒩 𑒁𑒞𑒳𑒪𑒢𑒲𑒨 𑒣𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒞𑒳𑒪𑒢𑒰 𑒏𑓂𑒭𑒞𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒮𑒧𑒮𑒰𑒧𑒨𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒮 𑒏𑒰𑒨𑒩 𑒏 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒨𑒠𑒱 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒏𑒧𑒩 𑒧𑒢 𑒧𑒹 𑒂𑒨 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏𑒰𑒩 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒋𑒏 𑒯𑒴 𑒏𑒰𑒨𑒩𑒞𑒰 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱?

𑒢𑒰𑓁 ! 𑒏𑒠𑒰𑒣𑒱 ।

𑒂𑒯 ! 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒟𑒢 𑒁𑒕𑒱।

𑒨𑒴𑒨𑓀 𑒏𑒳𑒪𑒰𑒑𑓂𑒩𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒧𑒳𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒪𑒹𑒨 𑒬𑓂𑒩𑒳𑒞𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑓀𑒮𑓁 ।

𑒣𑒳𑒝𑓂𑒛𑒩𑒲𑒏𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮𑓂𑒨 𑒢 𑒧𑒢𑒲𑒭𑒰𑓀𑒮𑒧𑓂 𑒥𑒰𑒪𑒱𑒬𑒰𑓁 ॥ 𑓗॥

𑒣𑒴𑒖𑓂𑒨𑒣𑒰𑒠 𑒏𑒳𑒪𑒲 𑒧𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒢𑒨 𑒏𑒧 𑒥𑒰𑒡𑒰 𑒏 𑒥𑒪 𑒏 𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒞𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒨𑒠𑒱 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣𑒱𑒞 𑒂𑒠𑒱 𑒨𑒰𑒿𑒔𑒰 𑒥𑒰𑒪𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒏𑒧𑒩 𑒂𑒖 𑒢𑒰𑒯𑒳 𑒏𑒞𑒯 ।

𑒬𑓂𑒩𑒳𑒞𑓂𑒫𑓀 𑒮 𑒏𑒰𑒪𑓁 𑒏𑒰𑒪𑒮𑒩𑓂𑒫𑒪𑒼𑒏𑒞𑓁

𑒑𑒳𑒝𑒰𑒠𑓂𑒦𑒳𑒞𑒨𑒰 𑒔𑒱𑒩𑒧𑒰𑓄𑒮𑒧𑒰𑒑𑒞𑓁 ।

𑒢𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒧𑒨𑓀 𑒔 𑒧𑒨𑒰 𑒯𑒱 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞𑓀

𑒣𑒳𑒢𑒬𑓂𑒔 𑒧𑒰𑒞𑒳𑒩𑓂𑒫𑒔𑒢𑒹𑒢 𑒫𑒰𑒩𑒱𑒞𑓁 ॥ 𑓖॥

𑒯𑒴𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒲𑒏𑓂𑒭 𑒯𑒧 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒿 𑒣𑒟 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒮𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒑𑒳𑒝 𑒋 𑒣𑒟𑒏 𑒏𑒹𑓀 𑒮𑓂𑒫𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒥𑒪𑒰 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒧𑒰𑒞𑒵 𑒇𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔 𑒨𑒠𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒿 𑒏𑒯𑒴 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒨 𑒮𑒠𑒰 𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒢𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖 ! 𑒬𑓂𑒩𑒴𑒨𑒞𑒰𑓀 𑒧𑒧𑒰𑒮𑓂𑒨𑒰𑓁 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞𑓁 ।

𑒃 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒇।

𑒢𑒵𑒣𑓁 -- 𑒧𑒧𑒰𑒣𑓂𑒨𑒮𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒾𑒞𑒴𑒯𑒪𑒧𑒢𑓀 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞𑓀 𑒬𑓂𑒩𑒼𑒞𑒳𑒧𑓂 ।

𑒢𑒵𑒣- 𑒏𑒯𑒴 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒳𑒞𑒴𑒯𑒪𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒰𑒏

𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑓁 -- 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒧𑒹𑒫 𑒨𑒰𑒫𑒠𑓂 𑒖𑒧𑒠𑒑𑓂𑒢𑓂𑒨𑒮𑓂𑒨 𑒮𑒏𑒰𑒬𑓀 𑒑𑒞𑒫𑒰𑒢𑒮𑓂𑒧𑒱 ।

𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰- 𑒨𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒧 𑒖𑒧𑒠𑒑𑓂𑒢𑓂𑒨 𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒙 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲

𑒢𑒵𑒣𑓁 -- 𑒞𑒞𑒮𑓂𑒞𑒞𑓁 ।

𑒢𑒵𑒣- 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠।

𑒢𑒙𑒲𑓁 -- 𑒞𑒞𑓁,

𑒢𑒙𑒲: 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒫𑒝 𑒧𑒰𑒮

𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑓂𑒪𑒞𑒰𑒢𑒨𑒱𑒪𑒞𑒳𑒓𑓂𑒑𑒞𑒢𑒲𑒪𑒏𑒰𑒨𑒧𑓂

𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣𑒥𑒪𑒬𑒰𑒪𑒱𑒢𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑓀 𑒠𑒡𑒰𑒢𑒧𑓂 ।

𑒮𑓂𑒧𑒩𑒰𑒧𑒯𑓀 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒫𑒩𑓀 𑒧𑒳𑒏𑒳𑒢𑓂𑒠𑒢𑒢𑓂𑒠𑓀

𑒑𑒔𑓂𑒕 𑒣𑒬𑓂𑒨 𑒏𑒱𑒧𑒢𑓂𑒨𑒞𑓂 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒞𑓁 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒼𑓄𑒮𑓂𑒧𑒱 ॥ 𑓓 ॥

𑒥𑒱𑒖𑒪𑒲 𑒢 𑒪𑒞𑒰 𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒔𑒱𑒏𑒢 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒬𑒼𑒦𑒰𑒨𑒧𑒰𑒢 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧, 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒲𑒨𑒧𑒰𑒢 𑒩𑒴𑒣 𑒢 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒰 𑒮 𑒬𑓂𑒩𑒫𑒰𑒪𑒨 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒧𑒳𑒏𑒳𑒢𑓂𑒠𑒢𑒢𑓂𑒠𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚𑒏𑒰𑒧 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒮𑓂𑒧𑒩𑒱𑒨 𑒢 𑒢𑒰𑒧 𑒏𑒰𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰𑒣𑒰𑒧 𑒢 𑒏𑒱𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒖𑓂𑒘 𑒢𑓄 𑒣𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒢𑒨 𑒑𑒳𑒝𑒑𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒢𑒰 𑒞𑒨 𑒥𑒰𑒪𑒠𑓂𑒦𑓀।

𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩𑓂𑒨𑓁 -- 𑒞𑒞𑒮𑓂𑒞𑒞𑓁 ।

𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩𑓂𑒨- 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒫𑒝 𑒧𑒰𑒮

𑒢𑒙𑒲𑓁 -- 𑒞𑒞𑒮𑓂𑒞𑒢 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞𑒲𑒨𑒫𑒢𑓀 𑒠𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒫𑒵𑒭𑓂𑒨𑒰𑓄𑒧𑒱,

𑒢 𑒞𑒥𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒧𑒬𑓂𑒩𑒧𑒱𑒏𑒰𑒑𑒞 𑒮𑓂𑒤𑒴𑒞𑒱 ।

𑒢𑒙𑒲- 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒫𑒝 𑒧𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑒣𑒰𑒧 𑒠𑒧𑒢𑒰 𑒬𑒰𑒧𑓂𑒢𑒲𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒨 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣𑒪𑒫𑒱 𑒢 𑒬𑓂𑒩𑒱𑒨𑓄 𑒫𑒱𑒬𑒰𑒪 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒪𑒠 𑒣𑒰𑒞𑒨?

𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩𑓂𑒨𑓁 -- 𑒞𑒞𑒮𑓂𑒞𑒞𑓁 ।

[illegible]- [illegible] [illegible]

[illegible]: -- भगवन् ! [illegible] ।

[illegible]- गुरुवर! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]: -- ततस्ततः ।

[illegible]- [illegible] [illegible]

[illegible]: -- तत श्रुत्वाऽहं भगवता, [illegible] [illegible],

न [illegible] ।

[illegible]- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]: -- अस्ति [illegible] भगवतः [illegible] [illegible] । ततस्ततः ।

[illegible]- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]: -- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible]- [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

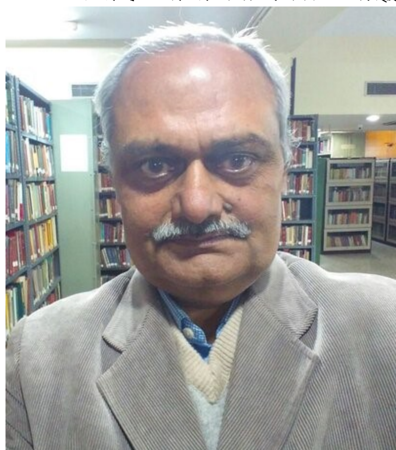
[illegible]: -- ततस्ततः ।

𑒑𑓂𑒩𑒢𑓂𑒟- 𑒬𑒰𑒩𑒠𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒠

𑒢𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩...

𑒌 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

<u>𑓑.𑓙.𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑓔𑒧 𑒐𑒹𑒣</u>



<u>𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩</u>

<u>𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑓔𑒧 𑒐𑒹𑒣</u>

𑓔

"𑒮𑒰𑒑𑒰𑒨! 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒠𑒧𑒧𑒞 𑒪𑒠𑒢𑒠𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒧 𑒙𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒰𑒑 𑒥𑒠𑒪 𑒕𑒲 ।"

"𑒮 𑒮𑒞𑒰𑓀 𑒏𑒢𑒰 𑒥𑒴𑒐 𑒥𑒠𑒪 𑒕𑒲?"

"कहु, एहना कोना कहलाक गप्प नहैक? आदि माटि-पानिमे जन्म लेलहुँ, जतय नेनामे सामाजिकताक संग खेललहुँ, जकरा पाछाँ भटकैत दिन कटल माटि-पानि-कणमे भटकैत रहलहुँ ताहि गामकेँ कोना नहि बिसरैत? वायुमण्डलमे आमक मञ्जरक सुगंध पसरि रहल अछि। निश्चय हमसभ भोरे आमक गाछक लगीचमे पहुँचब।"

"अहूँक ओतय नहि अछि। अपन जन्मभूमिक माटि-पानिमे अहाँक मिठास वर्णनीय अछि।"

जयन्तकेँ मोन पड़ैत छलनि नेनाक समय। कतेक निश्चल रहैत अछि नेनाक मोन। कोना कतेक दिन नीला भुनक अपना संग अपन ग्राम लग जड़ैत छलनि। कतेक कलरवि आ सत मोहकम खेलाइत रहैत छलाह। एक दिन ओहन पाठशालामे ताकैनक कोना आविष्कार नहि रहैक तँ आ अपन पिताक मार्गदर्शन सत शिक्षा पठाकान बिना नहि भेटैत छलै। कतेक नव आकृति सना कलम ओलैक ओ हुँ पाठशालाक नियमक विरुद्ध छिक। मुदा आकृति लल धनिसन। समयक संग भुनक लालनिक आधमी मिठ गर्भित रहैत ओल। आइ कतेक ववहेक लाद ओहन आ अपन गामक सीमानपर पहुँचलाह अछि तँ सतमेँ पहिन भुनक नीला मान पड़ि रहल छनि।

"आहाहा! जँ अपन अभ्यास नहि ली तँ पाकल गप्प कही।"

"अवश्य कहू। मानक बात हमरा नहि कहब तँ कहबै ककरा। यदी लल तँ हम अहाँक संग जतबा धरि अयलहुँ।"

"यदि कलमसँ सत्य शीलाक छब छैक। की आकाशमे नंत्र नया सकैत अछि?"

"के शीला?"

"हमर ननाक संगी। हमसभ संग-संग पढ़ल छली।

"हम बुझाय कहैत छी। ताब यदि गामक स्नातिस विज्ञान करल छल।"

बोली आमक गामक स्नातिस छअन्न आ हुनकर संग आवाल निम्नलाकाकनि सुसाहत छलाह। आजाय यकला निम्नक संग शीलाक यता लगबाक हेतु आगू बढ़लाह।

शीलाक पिता स्थानीक मानल बैद छलाह। हुनकर स्वभाव खित सुख्यम छल। बेदजीक यकमात्र संतान शीला छलखिन। मातृहीन संतानक माता-पिता दुनूक काज आगाह कय बहल छलाह। आ स्वमन: बहैत बोलीह। आब हुनकर विआह करबाक बयस भय गेल छलनि। बेदजी बहुत मनआलसदिन। मुदा शीला नहि मानलि। बेदजीकेँ किछु समाधान नहि नखलनि तँ आस्ना बुध भय गेलाह। ककरा की सकैत छलाह? यकमात्र संतानक मोहक आगू लाक-लाज बाबू छुटि गेल। "जकरा जे कहबाक छैक से कहथु,हम अपन संतानक

ज्ञन तँ नहि लग रहैत छी?"-ओ मोन-मोन सोचलनि। हुनका एहि बात बुझल छलनि जे नीलाक अध्ययनक संग नाम्री छैक। मुदा ई बातक संतोष छन्हि तखन संगहि हुनका कोना लागतनि? "एहि बात सन तँ सोंचब-तोचब छोड़ि सबाद नीक।"- ई ओ सोचलि। तँ बाकर ... केतहु नहि कहलि। हुनका मोनम लागनि जे समयक संग नीला स्वयं बाकेँ बिसरि जेतीह ओ तखन हुनकार बिवाह सुयोग्य वरक संग कएल जाएत। मुदा ई समय कहियो नहि आएल। नीला सुख नहि रहलीह।

आइ बातक दिनक बाद गामक सीमानपर ठाढ़ि अध्ययनकेँ सनसँ बहिन आबक ध्यान खसलनि। आचार्यजी हुनकार बात मानि गामम नीलाक सुखाबी कहबाक हेतु आबू नल बहलि कि बाकला बुझकेँ नहि सुझैत छलि-

"की अध्ययन नीलाकेँ जनैत छियनि?"

"अध्ययन के छी ओ नीलासँ अध्ययनकेँ की सम्बन्ध अछि?"

"आश्चर्य! हम छी जनकीधामक नायकाकेँजेक आचार्य। अध्ययन छिय शिष्य अध्ययनक निश्चे संयम नग रहलाक बाद हुनका संग हुनका अहिसहैत बाहिराम धनि आबि रहलहुँ।"

"एहि तँ बहुत नीक बात नल। आचार्यक अध्ययन शिष्यक प्रति बाहन मिनद तकानसँ नल्पत।"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]?"

[illegible]

[illegible]

"𑒋𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱, 𑒯𑒧𑒯𑒴 𑒂𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒧𑒢𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒂𑒃 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑒤𑒱𑒮𑒧 𑒔𑒪𑒴।"

𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒢𑒹𑒯 𑒧𑒡𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒖𑒼𑒑𑒲 𑒂𑒧𑒏 𑒑𑒰𑒕𑒞𑒩 𑒮𑒳𑒮𑓂𑒞𑒰𑒃𑒞 𑒍𑒧𑒢𑓂𑒢 𑒪𑒑 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰𑒯।

"𑒯𑒧 𑒕𑒲 𑒢𑒹𑒯 𑒧𑒡𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞।"

"𑒂! 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒧 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒢𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒯𑒴। 𑒂 𑒢𑒲𑒏 𑒕𑒟𑒱 𑒢?"

𑒢𑒹𑒯 𑒧𑒡𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒑𑒳𑒧 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒑𑒳𑒧𑓂𑒧𑒲𑒮𑒿 𑒍𑒧𑒢𑓂𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒱𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯।

"𑒮𑒳𑒢𑒰𑒿𑒧𑒢 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑒤𑒱𑒮𑒧 𑒔𑒪𑒴। 𑒨𑒰𑒩 𑒂𑒩𑒰𑒧 𑒑𑒣𑓂𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒏।"

"𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒯𑒧 𑒢𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒪𑒹𑒥 𑒞𑒰𑒥𑒹 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒥।"-𑒍𑒧𑒢𑓂𑒢 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯।

𑒂𑒐𑒰𑒨𑒏𑒖𑒲𑒫𑒏𑒿 𑒃 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒂 𑒮𑒯𑒢 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒫𑒰 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒚𑒹𑒮 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒢𑒱𑒏 𑒨𑒞𑓂𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋𑒪 𑒢𑒲𑒪𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒍𑒯𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒱𑒋 𑒪𑒹𑒪𑒰𑒯𑒱𑒢-

"𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥 𑒧𑒢𑒧𑒿 𑒣𑒛𑓃𑒱𑒢 𑒮𑒯𑒢 𑒗𑒳𑒩 𑒔𑒪𑒴। 𑒂𑒞𑒨 𑒮𑒯𑒢𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒣𑒳𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭 𑒏𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒞𑒪𑒰𑒯।"

"𑒞𑒞𑒏 𑒢𑒰𑒟𑒫𑒰𑒢 𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒲 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒫𑒢! 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒮𑒳𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱 -

"𑒄 𑒥𑒰𑒪𑒏 𑒣𑒩𑒧 𑒨𑒬𑒮𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒝𑓂𑒛 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒰𑒯।" 𑒮𑒹 𑒏𑒯𑒱 𑒍 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒂𑒏𑒮𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒨 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯। 𑒂 𑒁𑒢𑓂𑒢-𑒖𑒪 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒲𑒯 𑒂 𑒏𑒞𑒥𑒼 𑒏𑒯𑒪𑒼 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒪𑒲𑒯। 𑒞𑒲𑒢𑒧𑒰𑒮 𑒡𑒩𑒱 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒢-𑒖𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯। 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒃𑒪𑒰𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒣𑒮𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒏𑒩𑒧𑒰𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒏𑒯𑒨-

"𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒢 𑒪𑒼𑒏 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒪𑒦 𑒦𑒹𑒙𑒞।"

𑒏𑒞𑒥𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒼 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒏𑒋𑒪𑒏 𑒂 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒿 𑒮𑒦 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯 𑒂 𑒏𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒱𑒧𑒰𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒲𑒯। 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒍𑒏𑒩 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯-𑒕𑒰𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒲। "

" 𑒄 𑒞𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒁𑒢𑒩𑓂𑒟 𑒦𑒹𑒪 ।"-𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒖𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯 ।

𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒢𑒼𑒩𑒮𑒿 𑒦𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒍 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒖𑒥𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒟𑒱।

"𑒖𑒐𑒢 𑒄 𑒥𑒰𑒪 𑒕𑒪 𑒞𑒿 𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿? 𑒂𑒣𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒢 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒏𑒪𑒲𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒹 𑒂𑒣𑒏 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒏𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒣𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒯𑒱

𑒍𑒯𑒢 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢-𑒅𑒔𑓂𑒔𑒰𑒮𑒢𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒢𑒯𑒱𑒞𑒯𑒳𑒿"-𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨𑒫𑒞𑒲 𑒠𑒳𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒪𑒐𑒱𑒢।

𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒨 𑒁𑒧𑓂𑒧𑒢𑒏 𑒕𑒰𑒞𑒲 𑒤𑒰𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒥𑒼𑒧 𑒣𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒏𑒨 𑒏𑒰𑒢𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨𑒫𑒞𑒲 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒁𑒮𑒧𑓀𑒖𑒮𑒧 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒁𑒨𑒧𑒰𑒫 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒪𑒑𑒪𑒢𑒱 𑒓 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒂𑒠𑒱 𑒥𑒰𑒞𑒮𑒦𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒩𑒪𑒯𑒳𑒿।"𑒁𑒧𑓂𑒧𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒕𑒟𑒱। 𑒍𑒯𑒢 𑒢𑒲𑒏-𑒥𑒹𑒖𑒰𑒨𑒏 𑒥𑒼𑒡𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒦𑒰𑒫 𑒏𑒲 𑒏𑒨𑒪 𑒖𑒰𑒨?"-𑒍 𑒮𑒼𑒔𑒟𑒱।

𑒥𑒻𑒠 𑒧𑒡𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒏 𑒏𑒰𑒪𑒡𑒩𑒱 𑒥𑒳𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒮𑒢𑒪𑓂𑒨𑒰 𑒯𑒫𑒻𑒞-𑒮𑒳𑒢𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒯𑒪𑒢𑒱।

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑒠𑒱𑒢𑒰𑒧 𑒕𑒪। 𑒂𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒦𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒞।"

"𑒯𑒧 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒥। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒰𑒧 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒪𑒰𑒨𑒏 𑒪𑒨 𑒕𑒪। 𑒂𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒞।"

"𑒢𑒲𑒏 𑒕𑒻𑒏। 𑒯𑒧𑒮𑒥 𑒂𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒲।"-𑒦𑒰𑒑𑓂𑒨𑒫𑒞𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯।

𑒁𑒧𑓂𑒧𑒢 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒪𑒰 𑒪𑒨 𑒨𑒯𑒰𑒿𑒮𑒱𑒞𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒢𑓂𑒨𑒱𑒧𑒏 𑒯𑒏𑓂𑒏𑒳𑒥𑒞 𑒯𑒨 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒧 𑒏𑒨𑒥𑒰 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒯𑒢 𑒠𑒴𑒡𑒁𑒏 𑒨𑒠𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒱𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒼𑒞𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒏𑒨𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒍 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒮𑒰𑒑𑒱 𑒥𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒁𑒢𑒏𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰𑒮𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒫𑒡𑒰𑒢𑓀𑒁𑒧 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒨𑒻𑒞 𑒠𑒱𑒢-𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒍 𑒨𑒰𑒞𑒥 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒁𑒧𑓂𑒧𑒢𑒏 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒳𑒐 𑒨𑒯𑒲𑒮𑒰𑒧 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒠𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒥𑒱𑒞𑒍𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒑 𑒨𑒰𑒠𑒢 𑒯𑒪 𑒍 𑒁𑒧𑓂𑒧𑒢𑒏

𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒪𑒰𑓀𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒑𑒞𑒱𑒫𑒱𑒡𑒱𑒧 𑒫𑒱𑒩𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪 । 𑒅𑒣𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒢𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯 । 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋 𑒮𑒏𑒪𑒰𑒯 । 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨𑒧𑒞 𑒨𑒟𑒰𑒮𑒰𑒡𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒋𑒪 𑒏𑒪𑒢𑒱 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒮𑒤𑒪 𑒢𑒯𑒱। 𑒮𑓀𑒞𑒞𑒰𑒑𑒝𑒰, 𑒨𑒰𑒠𑒫𑒪𑒰𑒪 𑒥𑓀𑒠 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 । 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒨𑒞-𑒞𑒞 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 । 𑒂𑒥 𑒮𑒰𑒿𑒗 𑒮𑒰𑒪𑒰𑓀 𑒥𑒰𑒠 𑒂𑒠𑒱𑒫𑒰𑒮 𑒅𑒣𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒮𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒂𑒑𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒠𑒰 𑒏𑒩𑒢 𑒮𑓂𑒧𑒱𑒞𑒱𑒧 । 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒧𑒰𑒨𑒰 𑒧𑒳𑒢𑒪 𑒕𑒢𑒱 । 𑒨𑒰𑒠𑓀𑒫𑒏𑒞 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰𑒣-𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰𑒣 𑒠𑒧𑒏𑒪 𑒠𑒳𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒰𑒠𑒱𑒧𑒿 𑒏𑒲? 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒞𑒧𑒢𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒥𑒠𑒪𑒞 𑒠𑒳𑒐𑒏 𑒕𑒟𑒱 । 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒨𑒰𑒠𑒱𑒫𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒠𑒪𑒞 𑒮𑒼𑒢𑒫𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒡 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒠𑒪𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱।

"𑒧𑒰𑒨𑒰𑒫𑒞𑒲 𑒅𑒧𑒰 𑒏𑒩𑒥 । 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒮𑒣𑒢𑒏𑒿 𑒥𑒠𑒪𑒞 𑒏𑒯𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒠𑒳𑒿 । 𑒮𑒣𑒢𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒥 𑒅𑒢𑓂𑒯𑒰 𑒮𑒠𑒰𑓀 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒠𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒲 ।"

"𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒯𑒢𑒳 𑒮𑒠𑒰𑒿 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒳 । 𑒫𑒹𑒠𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒅 𑒮𑒠𑒰𑒿𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒥𑒰𑒠𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒧𑒿 𑒮𑒢𑒧𑒿 𑒨𑒰𑒠𑒱𑒢 𑒞𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒪 𑒅𑒩𑒰 । 𑒪𑒹𑒢 𑒏𑒅 𑒠𑒰𑒏𑓂𑒭𑒞 𑒥𑒠𑒞 ।"

𑒅𑒣𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒰𑒯 ।

"𑒮𑒠𑒲 𑒏𑒯𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒰𑒨𑒰𑒫𑒞𑒲 । 𑒯𑒧 𑒧𑒰𑒮 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒮𑒠𑒰𑒿𑒏 𑒢𑒪𑒧 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒂𑒢𑒱 𑒏𑒋 𑒥𑒠𑒥 ।"-𑒫𑒹𑒠 𑒧𑒡𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯 ।

अपन [illegible] [illegible] मौन स्वीकृति [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.७.[illegible] झा "[illegible]"- लोक आस्थाक केंद्र [illegible] कें माँ [illegible] देवी भगवती स्थान



[illegible] झा "[illegible]"

लोक आस्थाक केंद्र [illegible] कें माँ [illegible] देवी भगवती स्थान

मिथिलाँचल कें अनेक पवित्र स्थान मे सँ एक [illegible] कें माँ [illegible] देवी भगवती स्थान, जे [illegible] प्रसिद्ध [illegible] के

केँय स जनल जङ्गल छलि । नवादा भगवती स्थान दरभंगा जिलाक बहेड़ी प्रखंड सँ लगभग पाँच किलोमीटर उत्तर-पश्चिम मे नवादा गाँव मे अवस्थित अछि। माँ हयहट्ट देवी दुर्गा स्थान 52 सिद्ध पीठ मे शामिल शक्ति पीठ केँ रूप अछि। एहि दुर्गा स्थान सँ जुड़ल अनेक मान्यता अछि जाहि मे सँ एक अछि, शिव प्रिय सती सँ जुड़ल मान्यता। एहि शक्तिपीठ केँ बखान देवी भागवत पुराण आ मत्स्य पुराण मे सेहो वर्णित अछि । जाहि बखान अछि जे सती केँ वाम स्कन्ध एतहि खसल छलनि। कहल जाइत अछि जे जखन सती पिताक अपमान सँ क्रुद्ध भऽ अपन आ पिताक द्वारा आयोजित यज्ञ कुण्ड मे अपन आहुति दऽ देलनि। तखन महादेव सतीक शवकेँ लऽ केँ ताण्डव करऽ लगला सुदर्शन-चक्रक द्वारा सतीक शरीरकेँ खण्ड-खण्ड कएल गेल भगवतीक वाम स्कन्ध नवादाक एहि स्थान पर खसल, जतय आइ दुर्गाजीक भव्य मंदिर अछि। एतय प्रसाद स्वरूप ... अछि जे सिंहासनक विद्यमान केँय एनक आकारक अछि।

एहन मान्यता अछि जे लगभग 600 वर्ष पहिने राजा हयहट्ट केँ द्वारा एतय भगवतीक मूर्ति स्थापित कएल गेलनि। मुदा आब दुर्गा देवीक आ मूर्ति एतय नहि अछि. ... प्रखंडक ... गामक ... साधक प्रति दिन साधना-आराधना लेल ... एहि ठाम ... आ वृद्ध ... एतय आयल ... लगलाह त' ... दिन स्वप्न ... माँ ... स्वयं ... आब ... एतय नहि ... आ ...

तारा आर जतय [illegible] [illegible] नहि तँ आर [illegible] सँ [illegible] [illegible] आराधना [illegible] [illegible] साधक जाहि बात केँ मानक छल [illegible] नहि [illegible] उ बिना [illegible] केँ मूर्त रूपक पूजा [illegible] [illegible] आ [illegible] [illegible] [illegible] केँ आगू भगवान [illegible] [illegible] उपस्थित [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] उ आर तारा [illegible] [illegible] नहि. तँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] भगवतीक प्रवेश सँ सिंहासन सँ मूर्ति उपासक [illegible] [illegible] [illegible], उतय [illegible] जाहि मूर्तिक पूजा कएल उपस्थित अछि। जाहि ठाम सँ उपासक बोल भगवती केँ प्रतिमा आ अन्य सब वस्तु गुप्तकालीन अछि। जहि सिंहपीठ मे मात्र सिंहासन [illegible] [illegible] बोल अछि जिनकर पूजा वर्तमान मे होइत अछि। जाहि मंदिर मे उपासकक निराकार रूपक पूजा होइत अछि। [illegible] भगवती मे जाहि मंदिर केँ बहुत प्रसिद्धि छल, आदिसँ नवादा दुर्गा स्थानक प्राचीनताक आकलन कएल जा सकैत अछि।

कोना पहुँचब नवादा भगवती स्थान

नवादा भगवती स्थान दरभंगा जिलाक बेनीपुर प्रखंड सँ मात्र लगभग बीस किलोमीटर उत्तर-पश्चिम मे नवादा गाम मे प्राचीन काल सँ अवस्थित छनि। बेनीपुर प्रखंड सँ सीधे सड़क नवादा दुर्गा स्थान तक गेल अछि जाहि ठाम सँ ऑटो पकड़ि आ पहुँच उक्त नवादा भगवती स्थान। दरभंगा सँ [illegible] सीधे [illegible] [illegible] [illegible] जाहिठाम सँ [illegible] छी।

नवादा भगवती स्थान केँ धार्मिक आ ऐतिहासिक महत्व

आना त' जाहि दुर्गा मंदिरक प्रांगण मे [illegible] मास पूजाक छल

ग्रामवासी लोकनि नीक लागल कहैत छथि, मुदा ग्रामवासीय नववाला स वादिधाम नक्ष दूर दूर सँ अबैत छथि आ मैया कँ पूजा अर्चना करैत छथि। संगहि मैया के दरबार स जकरत क हिसाब सँ मनोकामना करैत छथि। यहन मान्यता अछि जे वादिधाम करल मनोकामना अवश्य पूरा होइत अछि। मनोकामना पूरा भेलाक बाद नक्ष पुनः वादिधाम आबि मनौती करैत छथि। जहि कहबा माला नबि नक्षक आबा जनी लागाल कहैत अछि मुदा नववाला स विनाल सला लबैत अछि आ मांसतिक कायकम सदा होइत अछि। नववाला कँ दलो दिनक बातबरा वादिधाम बड़ रमनगर न' जाइत अछि। नबाना नगवती स्थान कँ वौतिलामिक महत्व कँ संनाक यादि बात सँ लगायल जा सकैत अछि जे माज दयदक्ष कँ स्वावा यादि मन्दिर स मूर्तिक स्थापना नल बलानि जादि कहबा मैया कँ नाम दयदक्षा दवी पललानि यादि नक्षिपीठ कँ बखान दवी नागवत पुराण आ मनस्य पुराण स सदा नलैत अछि जादि कहबा सँ यादि स्थान क वौतिलामिक महत्व वढ़ि जाइत अछि। लोक ग्रामक कँड बनल यादि स्थान कँ पर्यटन कँ मान्यता नल्लावाक लल सदा प्रयास नया कहल अछि। मुदा यादिम कतक समस्य लागत नकन कना पीक नदि, कहबा बाक्षा समस्या यादि स्थलक विकास कँ लल आतक सक्रीय नदि अछि जतक दवानक बाटी।

-प्रमनंदन झा "पवन" संगम विहार, दिल्ली

-

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.६.आशीष अनचिन्हार- गजल



आशीष अनचिन्हार

कथानक

"याकला कथानक आदी मित्र ! विपलिप्लोक ।"

"कथा किया नहिँ ? दमन स किया ? आ विपलिप्लोक किया ?"

"मोन किछु खलग दहिला क' दाहि । कथानकम किछु खयना दिसाव दवयावक गुह्नहिम नदैछि । कथाम हि सुविधा नहिँ दाहिछि । आ मव स वसी खताँ मन विपलिप्लोक लदकमव ममम यहिला उहिछि ।"

"सुना कदव त दम खयन वात !"

"हँ ।"

"तदन नीक छै । याकला छीला मनम तैयाव खहि, सुनाउ ?"

"हँ ।"

"नीक छै । सुना छेय बाढव, वीजम 'लाकलाक नहिँ कवव ...."

....

खन्नाव बाहित, उह्नियाँक वला कदम तव मवल यवल छै । नीक लाक 'वढम' तव सिवा वदल छै उह्निया वलाक ।

....

नयावद सियावल थाँहिद, सुँद सूत आ कविदाम लतवायल, लायलाय, लायवैत लाल लाल लदु स ललाहित ववती, आ ललायल उह्नियाँक महिल याल यालाल नूआँ, आ आवबा याककात मनमायल दाँकल नीडक ददैछैत ववब सुदथानमव, आ छिडवी

[illegible]

. ...

[illegible]

[illegible]

[illegible]

....

[illegible]

[illegible]

……………………

[illegible]

…………………………

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"तब की ! शङ्कर बाबूक, बच्चनियाँक बात सबल सबल छै ।
नीक लोक बढ़ब तब बच्चनियाँक बातक दिवा बदल छै ।"

"आह ! बन्न कक हो दुबना बाग । दमन माह्व ध्याक्कल ज्ञयन ।"

"बस ! यतबम नँ बाक्कड़ छोलहुँ ? ड़ मुग मुग म हो ताक्कग बदल मक्क, आकब की काल काक्कत कतै ? .....कक्कानक नक्कँ याती ? सियालिम्निक ?"

"आह ! आ त याहब कवी । मुना कनक दमा त धब' हिय ! आह कत तयानक ! ....आब कहू !"

"त, शङ्कर बाबूत ..."

"ध्याब आह ?"

"हँ, कतौ म बात त आगू बढ़◌ाबती यबतै न !"

"हँ, काड !"

"ठीक छै । मुना 'लाकु नक्कँ वीजम । श्वान तलोक ज्ञक्कै । .....,
बच्चनियाँक बात सबल सबल छै । गूँह, मूँत आ कनिहा म लतबायल आ माह्व म धोब तक मुगीन यातनाक समाधि बनल मक्क आ । आ सनम मक्क डुनियाँक सबाध सहड़न मक्क आ आकब गाँक्कदम यकला आक्कानित दुन्न दुङ्कायित मक्कछ । यकला मुगक दुन्न ! - नीक लोक किया दिवा बोल आकब बतोक ? कहिया मन्न कायत हो नीक लोकक डुनियाँ ? कहिया बनत हो डुनियाँ नीक, सबहकलल ?"

समयक तालयब यकला तक्षी लाँगल मक्क - यकक्कमम ततालिह ! आ आक्क तक्षीम लतोक बदल मक्क बच्चनियाँ आ आकब बला , यनुलम डाक मूलेत ।

....

सद्वावक मुँहयव वाकाजिम उक्खनिसाँक लद्र स लहवहब टूट्य सक्कह, त चामव छिम उल्लवम मातल उमयउमवकाव कौत नीक लावक टूट्य ब्बयल सक्कह । नियक सक्कह -'तादव नवाम वढम वावा । ......'

....

"बाद ! बाद ! वह्न कक ! झ्ठ कब्बानक !"

"हँ, सक्क स वमी कहल की ङ सकौय ? सक्क स बाय्र त किब्ब कववाक उकनी लाक्कह ।"

"की कववाक उकनी ब्ब ?"

"सक्क सड़ल, मातल नीक लावक डुनिसाँक ब्बंस बा सवहकलल नीक डुनिसाँक निमाता ।"

"बाद ! कत नस्यानक ! वादन कब्बानक वङवस यलते ?"

"झ्ठ त सहाँ ङनी । दमवा त कब्बानक मुनसवाक ब्बल, स मुना हलहुँ ।"

"वाना कियाँ वङैब्बी ? बाव सहुँ दमवा सयाविजितसन तुया वहल ब्बी । वातक यीड़ा, वातक बावहन्न सहाँ कब्बानकम कना नवलहुँ ? बाह्यय सक्कह !"

"यीक कहलहुँ ! दमहुँ बादी मुगीन सातनाक वाकला किसा ब्बी । दमहुँ वाकला उक्खनिसाँक वला ब्बी, ङकव माय सयन वलाक वजाव'म सयन ङन ह' हलक ।"

"बाद !"

-

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓒.𑓖.𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 "𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢"- 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒥𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰



𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 "𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢"

𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒥𑒲𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰

𑓑

[illegible]

[illegible]
[illegible]?
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ई आदमी बाजल छल हमर बाबूजी सिकंदर महान केर बहुत तन्ना पढ़थिन आ कहियो काल कहैत पढ़थिन जे हम सभ तऽ हमर विचारसँ सिकंदर महान जकाँ कोनो हमर नाम बादल कऽ देल।

पंडी जी तऽ पास की छल बाजल पढ़ल दियौ आ नाम बादल कऽ दियौ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

५.१.कुमार मनोज कश्यप- ५ टा लघुकथा



कुमार मनोज कश्यप

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

- '𑒏𑒱 𑒏𑒱𑒨𑒻?'

- '𑒥𑒼𑒪𑒱 𑒏' 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒾 𑒞𑒐𑒢 𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒻! '

- '𑒏𑒱 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒾 𑒋𑒐𑒢 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒏' 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒕𑒻 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒧𑒰𑒮 𑒏 𑒏𑒱𑒩𑒰𑒨𑒰 𑒋𑒑𑒰𑒩𑒯 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒻, 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒞' 𑒧𑒏𑒰𑒢 𑒐𑒰𑒪𑒲 𑒏' 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒻....... 𑒥𑒰𑒣 𑒏 𑒯𑒰𑒟 𑒏 𑒂𑒣𑒩𑒹𑒬𑒢 𑒏𑒩𑒞𑒻। 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒼𑒐𑒰 𑒏 𑒖𑓂𑒫𑒰𑒩𑒢 𑒮 𑒠ढ़◌𑒰𑒏 𑒕𑒰𑒑𑓀𑒞𑒲 𑒕𑒻....... 𑒮𑒱𑒕𑒪𑓂𑒪𑒰 ख़𑒥𑒰𑒥 𑒞' 𑒥𑒠𑒪 𑒕𑒻। 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒏𑒻𑒏 𑒥𑒩 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒕 𑒧𑒲𑒚𑒏 𑒮𑒱𑒢𑓂𑒢𑒲-𑒮𑒱𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒞' 𑒏' 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒥𑒼𑒪𑒻𑒢...... 𑒕ड़◌ 𑒮𑒱𑒢𑒮𑒱𑒢𑒰𑒏 𑒐𑒰𑒯𑒱𑒢। 𑒗𑒴𑒢𑒰 𑒮 𑒏𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒞 𑒨𑒢 𑒧𑒳𑒖𑒥𑒑𑒥 𑒑𑒥𑒧 𑒏𑒨ड़◌𑒰.........!!'

𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒥𑒕𑒻𑒞 𑒥𑒠𑒪𑒻 𑒧𑒢𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒰 𑒥𑒠𑒲𑒥 ..𑒕ड़𑒥𑒞..𑒨𑒰𑒥𑒥 𑒥𑒢𑒪 𑒨𑒰ढ! ख़◌𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒥𑒞𑒏 𑒕𑒼𑒙𑒏 𑒠𑒰𑒏𑓂𑒏 𑒕𑒻 𑒬𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒰𑒤𑒢𑒞𑒰𑓀 𑒢 𑒥𑒠𑒹। 𑒪𑒱𑒨𑒰𑒨𑒥 𑒏𑒯𑒳𑒪 𑒨𑒥 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒨ड़𑒪 𑒕𑒪𑒻।

𑓖

𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡-𑒣𑓂𑒩𑒥𑓀𑒡𑒏

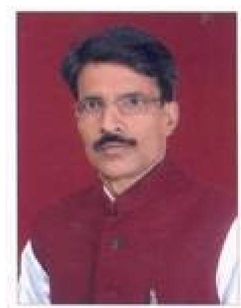
𑒨𑒰𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒮𑒱𑒧𑒢𑓂𑒢𑒢 𑒏 𑒕𑒪𑒻 𑒬𑓂𑒩𑒰 𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒥𑒠𑒰𑒢 𑒨𑒏-𑒏𑒰𑒧𑒥𑒰 𑒏 𑒨𑒱𑒥𑒰𑒥 𑒮' 𑒨𑒱𑒥𑒖𑒨-𑒨𑒰𑒞 𑒮𑒠𑒰 𑒞' 𑒥𑒠𑒪 𑒕𑒪𑒻। 𑒨𑓀𑒞𑒏𑒲 𑒬𑒨𑒢 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒏 𑒏𑒰𑒧-𑒮𑒠𑒲𑒧 𑒮' 𑒨𑒱𑒥𑒖𑒨 𑒢𑒳𑒏𑓀𑒨𑒰𑒞 𑒏𑒥𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢 - '𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒮' 𑒮𑒱𑒪𑒳, 𑒮𑒱𑒮𑒕 𑒏𑒥𑒥𑒲! 𑒠𑒮𑒥 𑒡𑒮𑒨𑒢𑓂𑒢𑒲! 𑒗𑒰𑒢𑓂𑒢 𑒥𑓀𑒏 𑒮 𑒮𑒲𑒢𑒱𑒨𑒥 𑒥𑒲𑒢𑒕𑒰𑒥 𑒐𑒰𑒯𑒱।' 𑒑𑒥𑒰𑒢𑓂𑒢𑒞 𑒮𑒱𑒮𑒕 𑒏𑒥𑒥𑒲 𑒮𑒠 𑒠𑒱𑒮 𑒞𑒏𑒪𑒢𑒱। 𑒢𑒮𑒰𑒏𑒲 𑒮𑒠𑒰 𑒏𑒢𑒰 𑒨𑒰𑒮𑒰𑓀 𑒥𑒠𑒱𑒞𑒥𑒱; 𑒠𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒞' 𑒕𑒨-𑒢𑒱𑒠𑓂𑒢𑒢𑒏 𑒏 𑒨𑒠

घर छलाहिन! मिसेज गुप्ता जे सीमा सुरक्षा बल मे डिप्टी कमांडेन्ट छलीह स्वयं अपन परिचय देलनि। सबक कनियाँ क बढ़ि-चढ़ि क' परिचय दैत रहि मिसेज सिन्हा दीननाथबला स' उठलीह स धँस' लगलीह। सत घर-स-घर उच्च पदस्थ कामकाजी महिला छी; ताहि स दिनकर अपन परिचय स करब स' दम किछु नहिं कहैत छी, तुरन्ता बुझलनि। तासँ थाड़ देखि पड़लनि। हीनभावना बुझलाहिन- 'सिन्हाजी आब अहाँ न अपन कनियाँ स' सबक परिचय करबियौन?' 'हँ.... हँ.... सबक्या। सुगंधा हमर धर्मपत्नी नहिं; अर्द्धांगिनी छथि! .. आधा कि साथियहुँ हमर सम्पूर्ण सजीवक स्वामिनी! दिनक हमर जीवन स प्रातःकालक जत सुगंधा छेल जाय; कष्ट देत! ई दिनक कुशल गृह-प्रबंधन क कमाल छनि जे हमरा सत आनंदमय जीवन-यापन क' सकल छी आ उन्नत बन्ना सन्तानिक अधिकारी छथि।' सुगंधा क छाती गर्व स' फूल' लगलनि। अन्य महिला सत कखनो न कखनो बहान आत' स' सहनताक बात ताक' लगलीह।

-कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति: भारत सरकार क उप-सचिव, संपर्क: सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट क सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.८.नंद कुमार सिंह- बीतल बेर



नंद कुमार सिंह

बीतल बेर

तारिखक कमेँ जँ देखल जाय तँ मैथिली साहित्यक कृतिकारक सभ 'बोबन गलोन' छी। पुस्तक छी। ग्रा पुस्तक ओ ग्रामः कथा संग्रहक नाम नागम पढ़ैत अभिनवतीन पढ़ैत छथि। मुदा मैथिली साहित्यक ख्याति-लब्ध साहित्यकार, विद्वद् कृ-पाठकक प्रमुख संपादक महोदय आदरणीय श्री गङ्गेन्द्र बाबू स मानवाक लल तैयार नहि छथि। हुनका सभ छनि जे जँ जाहि पुस्तकेँ अधिक कथा रचना संग्रहक कहिना नागम वैसा देल जाय तँ आहि संग्रहक मान 10 पुरा वटि जतैक (जतय कथा संग्रहकँ मैथिली नाया मानल जाय)। मुदा सभ की छी स समयासँ नीक क जानि सकैत अछि? 'बोबन गलोन' सबाक स्वस्थ प्रमाण समया तखन नहि जरूरत अछि जखन सभ अपनहि विभु विलक्षण कविता, कथा, निबंध आदि मूल्यांकन करैत छी।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ssssss, [illegible]

[illegible] 20-22 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑒥𑒖𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒰 𑒕𑒞𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒱𑒮 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒍 𑒍𑒩 𑒣𑒴𑒕𑒪𑒏-𑒣𑒰𑒕𑒏?

"𑒯𑒴 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒾।"

'𑒩𑒏𑒧 𑒠' 𑒠𑒱𑒌𑒏।" 𑒥𑒰𑒠 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒥𑒰𑒪𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒍 𑒏𑒯𑒱 𑒠' 𑒏𑒋 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒠𑒪𑒰𑒥𑒪𑒰𑒏 𑒁𑒣𑒧𑒰𑒢 𑒠𑒳𑒐𑒰𑒧 𑒏𑒋 𑒥𑒠𑒪 𑒮𑒪𑒰𑒯 𑒣𑒳𑒩𑒰 𑒍 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒪𑒏। 𑒍 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒏 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒍𑒯𑒱 𑒯𑒪𑒏। 𑒥𑒰𑒠 𑒏𑒏 𑒕𑒰𑒣𑒏𑒩 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒰𑒢𑒱-𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒕𑒰𑒞𑒲 𑒣𑒰𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒏। 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒥𑒰𑒪𑒲𑒏 𑒁𑒢𑒱𑒧𑒪 𑒥𑒢𑓀𑒠𑒢 𑒕𑒰𑒞𑒲 𑒥𑒯𑒻𑒏। 𑒥𑒰𑒠𑒏 𑒮𑒰𑒢 𑒍𑒩 𑒍𑒧𑒠𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒪𑒻𑒏। 𑒍 𑒁𑒢𑒏𑒥𑒩𑒼𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒱𑒮 𑒯𑒫𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒕𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒰𑒯:

"𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒲 𑒦𑒰𑒨! 𑒃 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪 𑒥𑒪𑒰 𑒛𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒛𑒏𑒻𑒞! 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒠 𑒥𑒛𑓃 𑒧𑒯𑒏𑒑𑒲 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪𑒧 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒛◌ॉ𑒏𑓂𑒙𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒯𑒻𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒪 𑒯𑒧 𑒣𑒯𑒱 𑒛𑒏𑒻𑒞𑒏 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒕𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒣𑒯𑒢 𑒡𑒩𑒱 2,500 𑒙𑒰. 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒩𑒰 𑒯𑒪𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒣𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱...।"

"𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒠𑒹𑒞 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒕𑒟𑒱𑒢?" 𑒃 𑒥𑒰𑒞 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒪𑒏𑒮𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒻𑒏।

𑒯𑒧 𑒍𑒞𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒯𑒳𑒿।

𑒍𑒩 𑒯𑒧 𑒯𑒰𑒁𑒩 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣 𑒮𑒓𑒏 𑒣𑒩 𑒮𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒣𑒞𑒩𑒰 𑒮𑒓𑒏𑒏 𑒥𑒰𑒧 𑒦𑒰𑒑𑒧 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒰 𑒛◌ॉ𑒏𑓂𑒙𑒩𑒏 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒏 𑒮𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒣𑒰𑒨𑓁 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒯𑒳𑒢𑒲 𑒪𑒑𑒳𑒪 𑒣𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒧𑓂𑒯𑒢 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒥𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒛𑒏𑒮𑒿 𑒍𑒥𑒰𑒓𑓂𑒏𑒲 𑒏𑒢𑒫𑒰 𑒥𑒪𑒰 𑒦𑒰𑒨𑒞 𑒏𑒯𑒰𑒿 𑒪𑒰𑒏 𑒯𑒞𑒻𑒏 𑒕𑒏𑒩𑒰 𑒍 𑒑𑒱𑒠𑓂𑒡-𑒦𑒴𑒧𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒫𑒻𑒞 𑒪𑒰𑒟𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒥𑒰𑒑𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒮𑒳 𑒯𑒠 𑒃𑒭𑓂𑒨𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒞 𑒮𑒪𑒢𑒱 (𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒫𑒞𑓁)। 𑒍 (𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒫𑒞𑓁) 𑒧𑒰𑒢𑒯𑒱-

मान माथैत कहैत छलाह, "ई लाक मत स्वस्थ किताब छैक? बीमार तया हमरा लग ईलाजक हेतु किताब नहि पढ़ैत अछि?" हम आगू बढ़ैत छी।

किन्तु हम बजलाक पश्चात, सतबाक बढ़िना कत दोकानमे दुनियाँ जुत्ताबाला दस जोड़ बाजि कहल छलीह। तुनक शिक्षाम जुल मिलाकय तीन तरहक जोड़, 15-20 टका आ किनुबाक किलाक लगभग हाजिरत मिरचाई छलनि। आतया दोकानमे जोड़ी फंदला। आदि जोड़ीमे निकलय तला युगलक पाछ दरबा याच कहैत। युगला दस दुनियाँ कहलथिन, "जोड़ 5 नं. जुत्ता"। ताम जुनि आदि युगलकेँ लागलैक ऊना आ दुनियाँ 5 नं. जुत्ता जोड़ बढ़िकय कना कहयम क' कहल छलैक। आब तुरंत तलैक जाल-जालाय आ थंततः जोड़क दस तय तलैक 4 नं. जुत्ता। युगल बाक जुत्ता जोड़ लेलक 4 नं.कर जुत्ता याद अपना हमरैत, चलैत बनला। हम ई मत श्रद्धानाक्षम दथ तुकाल छलहुँ, बाढ़िलल दस ऊनत आब हमरा लल आबस्थक नहि बढ़ि बोल छला। हमहुँ द् जुत्ता जोड़ ललहुँ आ द्-टाकियाक बाकिटा मिळ्कि आपना हमा दलिऔक। बाढ़िदस दुनियाक धैय टाकि बोलैक। आ बाजलि-बाबू टा टाक आब दिऔक। हम कहलिऔक, "बढ़न तँ गहाँ आपना मतकँ द् टाक जुत्ता जोड़ दन लिऐक।"

आ बाजलि-"बाबू, 300 टाकाक माल आनन छलिऐक, कल्ला मोटा छैक, आई दुमाइत ने छैक ऊ बूँदिआ ऊपर त' मकैत।" हम कहलिऐक, "गल्ला गहाँ बढ़न कनां, हमरा बाँज जुत्ता जोड़ आब द' दिआ।" ई कहि हम आपनामाँ पूछम दल बोल बाई झुका कय 35 टाका द' आगू बढ़लहुँ।

𑒂𑒞𑒣𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒓𑓂𑒑𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒯𑒧 𑒧𑒢𑒯𑒱-𑒧𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒞𑒳𑒪𑒢𑒰 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒩 𑒥𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒡𑒢𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒿 𑒏𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒓𑓂𑒑𑒩𑒱𑒧 𑒂 𑒞𑒳𑒔𑓂𑒕 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒖𑒯𑒢 𑒏𑒱 𑒯𑒧 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒥𑒛𑓃𑒏 𑒯𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒰𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। "𑒂𑒯𑒱𑒩 𑒧𑒰𑒑𑒪 𑒡𑒰𑒿𑒣𑒪 𑒁𑒞𑒱𑒫𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒰 𑒏𑒼𑒢 𑒂𑒠𑒱 𑒥𑒳𑒪𑒱𑒨𑒰 𑒣𑒩 𑒅𑒣𑒏𑒰𑒩 𑒖𑒹 𑒏𑒢 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿।"

𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒯𑒧 𑒥𑒲𑒔-𑒥𑒲𑒔 𑒁𑒣𑒢 𑒗𑒼𑒩𑒏 (𑒏𑒱𑒞𑒰𑒥𑒏) 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒣𑒜𑓃𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒏𑒋𑒞𑒰 𑒥𑒯𑒪𑒱 𑒢𑒰𑒯 𑒣𑒣𑒩 𑒕𑒰𑒪𑒯𑒳𑒿, 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒏𑒢𑒹𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑒲.𑒥𑒲 ऑन 𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒿 "𑒏𑒼𑒢 𑒥𑒢𑒑𑒰 𑒏𑒩𑒼𑒛𑓃𑒣𑒞𑒱 𑒁𑒩𑓂𑒟𑒰𑒞 𑒏𑒹𑒥𑒲𑒮𑒲" 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒦' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒯◌ॉ𑒙-𑒮𑒲𑒙 𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒕𑒼𑒙-𑒮𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒂𑒋𑒪 𑒋𑒏𑒙𑒰 30-35 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒲𑒨 𑒫𑒱𑒡𑒫𑒰। 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒮𑓀𑒔𑒰𑒪𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒁𑒧𑒱𑒞𑒰𑒦 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒢𑒮𑒿 𑒑𑒣𑒮𑒣𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒍 𑒥𑒞𑒾𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹, "𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒣𑒞𑒱 𑒋𑒏 𑒮𑒰𑒡𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯, 𑒂 𑒏𑒣𑒰𑒮𑒏 𑒐𑒹𑒞𑒲 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒥𑒻𑓀𑒏𑒮𑒿 2 𑒪𑒰𑒐 𑒙𑒰𑒏𑒰 𑒇𑒝 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒇𑒝-𑒫𑒮𑒴𑒪𑒲 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒥𑒻𑓀𑒏𑒏 𑒞𑒞𑒹𑒏 𑒠𑒥𑒰𑒥 𑒥𑒢𑒾𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒍 𑒠𑒳𑓁𑒐 𑒦𑒨 𑒣𑒳𑒢 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒏' 𑒪𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒐𑒹𑒞𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒖𑒿 𑒏𑒹𑒥𑒲𑒮𑒲 𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒩𑒏𑒧 𑒖𑒲𑒞 𑒮𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒿 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒮𑒰𑒞 𑒂 𑒞𑒲𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒲𑒨 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒪𑒰𑒪𑒢-𑒣𑒰𑒪𑒢, 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰-𑒠𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒂𑒠𑒱 𑒣𑒩 𑒐𑒩𑓂𑒔 𑒏𑒩𑒥।" 𑒋𑒞𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒿 𑒣𑒞𑒰 𑒔𑒪𑒪 𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒞𑒱𑒏 10 𑒏𑒩𑒼𑒛𑓃 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒏𑒢𑒹𑒏 𑒏𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒢𑒏 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒼𑒔𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒖𑒹 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒦𑒧 𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒰 "𑒡𑒢𑒲" 𑒅𑒣𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒲? 𑒮𑒦𑓂𑒨 𑒏𑒯𑒞𑒲 𑒞𑒿 𑒨𑒠𑒱 𑒮𑒦 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢𑒧 𑒧 𑒮𑒿 𑒏𑒳𑒕 𑒮𑒦 "𑒡𑒢𑒲" 𑒞𑒿 𑒦'𑒋 𑒮𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪-𑒫𑒱𑒣𑒩𑒲𑒞 𑒮𑒦𑓂𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒮𑒯𑒰𑒖𑓂𑒘𑒏𑒮𑒣𑒞𑒰, 𑒁𑒧𑒢 𑒫𑒱𑒫𑒹𑒏𑒿 𑒢𑒧𑓂𑒩 𑒏𑒋𑒪 𑒠𑒹𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒟𑒰𑒢 : 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩𑒲, 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒏𑓂𑒩𑒨𑒢

𑒏𑒪𑒰 𑒛ॉ𑒏𑓂𑒙𑒩, 𑒠𑒨𑒰𑒫𑒰𑒢, 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒏𑒳𑒙𑒢𑒰 𑒂𑒠𑒱।

…𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒧𑒹𑒿 𑒏𑒟𑒰 𑒔𑒰𑒯 𑒢𑒲𑒧𑒏𑒿 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒥𑒢𑒰𑒏𑒨 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒪𑒱𑒐 𑒪𑒲, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒪𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒱 𑒮𑒏𑒪। 𑒂𑒥 𑒥𑒳𑒗'𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒟𑒰 𑒂𑒢 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒣𑒩 (𑒢𑒰𑒙𑒏, 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒢𑒯𑒱) 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒨 𑒩𑒯𑒥 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒂𑒮𑒰𑒢 𑒯𑒼𑒨𑒞, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒞𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒥…।

𑒯𑒧 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨 𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒲 𑒖𑒹, "𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒂𑒥 '𑒟𑒲𑒧' 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒂 𑒁𑒦𑒱𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱-𑒏𑒾𑒬𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒔𑒰𑒯𑒲, 𑒖𑒏𑒩 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒟𑒰 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒁𑒕𑒱।"

𑒂𑒥 𑒖𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒥𑒰𑒞 𑒔𑒰𑒯𑒥 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒯𑒞𑒰𑒯 𑒞𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒡𑒰𑒢𑒲𑒧𑒹𑒿 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒰 𑒨𑒰𑒔𑒢𑒰 𑒏' 𑒪𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒂𑒥 𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒲?

-𑒛ॉ. 𑒬𑓀𑒦𑒳 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒮𑒱𑓀𑒯, 𑒫𑒩𑒲𑒨 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒓𑓂𑒖 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨, 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒧𑒱𑒬𑒢, 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒨 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢, 𑒧𑒻𑒮𑒴𑒩 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩-9986890429

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓒.𑓕.𑒬𑒱𑒫 𑒬𑓀𑒏𑒩- 𑒏𑒟𑒰- 𑒔𑒰𑒯𑒞

𑒬𑒱𑒫 𑒬𑓀𑒏𑒩

𑒏𑒟𑒰- 𑒔𑒰𑒯𑒞

(1)

कथा- 'पाथर'

ओहि परोपट्टामे मिथलेश बाबूक मकानक जोड़ा नहि छल. दूरहिसँ पता चलि जाइत छल. ठेसक कोनो जवाब नहि। झाँटि-बिहाड़िमे पहाड़ जेकाँ ठाड़. न टस-सँ-मस। मकान एतेक चर्चित छल - जे टोलक नामे मिथिला टोल पड़ि गेल।

मिथलेश बाबूक दलान, खरिहिआन आ घर सभ बड़ भव्य छल - दलान आ खरिहिआन बेस नमहर। टोलमे कोनो शादी-बिआह हुअए तड बरिआतिक मेल हुनकरे दलानक आश्रय छल। हुनकर दलान कतेको बेटीकेँ कन्यादान करवा चुकल छल। लगनक समयमे हुनकर दलानक स्वरूप रंगीन भड जाइत छल. वसंतक बयार बहए लागैत छल। चूँकि ओहि टोलमे तेहन कोनो तरहक स्थान नहि छल जतड कि कोनो तरहक सामाजिक उत्सवक आयोजन नीक जेकाँ कएल जा सकैत छल. नहि तड कोनो तरहक जनवासा छल आ नहि तड कोनो तरहक स्कूले छल। हालाँकि एकटा मिडिल स्कूल छल मुदा ओ टोलसँ दूर. बाधमे छल. जेकर कि शादी-बिआहमे कोनो उपयोगीता नहि छल।

मिथलेश बाबूक जमानामे मखान खरइ वाला मल्लाह सभ मखानक समयमे, हुनके दरवाजा पर डेरा देने रहैत छल। टोलमे कोनो पंचैती हुअए तड मिथलेश बाबूक दलान पर पंचायतक बैठाड़ होअए।

भदबरिआमे जखन बदरी लागि जाइत छल, तड चारि-पाँचटा ताशाक पार्टी गुलाम-बीबी-एक्का-दहलाक गणितमे ओझराएल. अपना जोड़ीकेँ जीतबाक दावेदारीमे एड़ी-चोटीक जोर लगाबए।

②

कखनो-काल बीच-बीचमे माहौल गरमा जाइत छल। कोनो-कोनो पार्टी क्षणिक आवेशक बादिमे भसिया कऽ उकटा-पैंची करऽ लागैत छल। लोक क्षणिक आवेशमे केहन उग्र रूप धारण कऽ लैत अछि आ केहन विकट परिस्थिति आबि जाइत अछि। एकर छोट-मोट उदाहरण एहिठाम देखबाए पड़ैत छल। मुदा, अंतमे सभ किछु शान्त भऽ जाइत छल।

मिथिलेश बाबूक आदत छलन्हि - दू टाइम चाय पीबाक - भोर आ साँझमे। ओहि टाइम दलान पर जे कोइ व्यक्ति उपस्थित रहथि, हुनका चाय मिलनाए अनिवार्य बूझू। ताहि हेतु कतेको लोक चाहक लोभे दरवाजा पर पेटकुनिआ देने रहथि।

दलानक आगूमे खरिहिआन बेस नमहर छल। खरिहिआनक चारू कात बेली, चम्पा-चमेली, गुलाब, सींगहार, अड़हुल आदि फूलक गाछ लागल। खरिहिआन कम पुष्पवाटिका अधिक बुझाइत छल। खरिहिआनक चारू कात बाँसक जाफरी लागल आ दूटा गेट छल। दूनू गेट पर अशोकक गाछ - ई गाछ आगान्तुक स्वागतमे सदिखन तैयार रहैत छल। केहनो तमसाएल व्यक्ति हुनकर दरवाजा पर पहुँचि जाइत छल तऽ हुनकर तामस छू-मंतर भऽ जाइत छल। हुनकर दलानक हवामे एकटा दोसरे मदिरा मिश्रित छल आहि मदिराकेँ पान करलाक उपरान्त मदिरा तामससँ प्रतिक्रिया कऽ तामसकेँ उदासीन बना दैत छल। खरिहिआनक एक कातमे चापाकल छल, जेकर शीतल आ मधुर जलसँ लोक तृप्ति होएत छल।

दलानक बगलसँ आँगन जएबाक रास्ता छल।

(३)

एहि प्रकारे पूरबसँ दलान आ एकटा घर, उत्तरसँ दूटा घर, पश्चिमसँ दूटा घर आ दक्षिणसँ दूटा घर—सभटा पक्का-पोखरिया-पाटन। चारू कातसँ घर, बीचमे आँगन बेस नमहर। पछबरिया आ उत्तरबरिया कोनमे छत पर जएबाक लेल सीढ़ी छल। घर सभ बेस लैल-फैल आ बड्ड सुन्दर। घरमे सुख-शांतिक सरिता बहैत छल।

मिथिलेश बाबूक स्वभाव बड्ड नीक, हुनक स्वभावमे शामिल छल—शांतचित्त, समाजसेवी, उदारचित्त, परोपकारी, सामाजिक कार्यमे सदिखन आगू रहब, कन्याकेँ शिक्षामे आगू करएमे विशेष योगदान—सचमुच गौ आदमी। तेहने हुनकर धर्मपत्नी—सुशीला देवी। मिथिलेश बाबूक खेती-बाड़ी बड्ड विशाल, दरवाजा पर सदिखन एकटा महीस आ एकटा गाय—दूधक लेल। जहियासँ ट्रैक्टर खरीद लेलन्हि ओहि दिनसँ बथान बरदविहीन भऽ गेल।

मिथिलेश बाबूकेँ दूटा बेटा—नरेश आ गणेश। दुनूटा बेटा नान्हिटासँ बदमाश—एकटा अगत्ती तऽ दोसर खुरलुच्ची। मिथिलेश बाबू कतेक प्रयास करलन्हि—जे बेटा पढ़ि-लिखि मनुक्ख बनि जाए। मुदा दुनू बेटा शपथ खा लेने छल कि सूरज देवता पूरबसँ पश्चिममे उगए लगताह, पढ़ब नहि, चाहे जे किछु भऽ जाए। हालाँकि मिथिलेश बाबू पढ़ाबऽ खातिर दरवाजा पर एकटा मास्टर साहेबकेँ सेहो रखलन्हि, मुदा परिणाम विपरीते रहल। एतेक धरि सफलता मिलल, जे खीचि-तीरि कऽ नरेश आठवाँ तक आ गणेश सातवाँ तक पढ़िकऽ अंगूठा छाप कलंककेँ धोइ देलक

④

आ साक्षर बनि गेल। दूनूटा बेटा टोलक भुच्चा-लफंगाक सत्संगमे पड़िकऽ सुपुत्रसँ परिवर्त्तित भऽ कुपुत्र बनि गेल। दूनूटा बेटा बाइक लऽ कऽ दिनभरि चौक-चौराहा आ बाजारमे छिछियाइत रहैत छल। चौकक चाहक दोकान पर गुलछर्रा छोड़इत आ राजनीति पर बकथैठी करैत अपनाकेँ राजनेता सिद्ध करबाक विफल प्रयास करए। मिलै-जुलै कऽ ई दिनचर्या बनि चुकल छल। दूनू बेटाक क्रियाकलाप देखिकऽ मिथलेश बाबूक आ हुनक पत्नीकेँ टेंशन बढ़ल जाइत छल। अंतमे कनिआ परामर्श देलखवान्हि - "जे नरेशकेँ विवाह कऽ दिऔक। शायद घर-गृहस्थीमे ओझरा कए सुधरि जाए।" मिथलेश बाबू नरेशकेँ विवाह कऽ देलखवान्हि। मुदा नरेश खेती-गृहस्थी देखबाक बदला कनियामे ओझरा गेल। कनियाकेँ आगू-पाछू करए लागल। दिनभरि कनियामे सटल रहैत छल। मतलब कनियाकेँ बॉडीगार्ड बनि गेल।

गणेशाक सेहो विवाह करबाक वयस भऽ गेल छल। गणेशकेँ पड़ोसक गाम करनौतीमे एकटा दोसर जातिक कन्यासँ प्रेम-प्रसंग चलैत छल। लड़की नव सांस्कृतिक रंगमे रंगल छल जेकरा ऊपर पाश्चात्य सांस्कृतिक मैल जमल छल। फैशनक बोखार लागल छल लड़की ऊपरसँ गोर मुदा भीतरिया कारी। एहि प्रेम-प्रसंगक बिहाड़ि कतेक बेर उठि चुकल छल। अड़ोस-पड़ोसमे, चौक-चौराहा पर आ मौगी-मेहरमे सेहो कानाफूसी होमऽ लागल छल। एहि तरहक प्रेम-प्रसंगक चर्चा आगिक लपेटि जेकाँ बहुत तेजीसँ फैलि जाइत अछि। गामक चौक पर एहन खबरिकेँ लोक नूनगर-चहटगर बनाकऽ खूब सुनाबैत अछि। जेना-आइ दूनूटाकेँ

(5)

ओहि बाधमे देखबमइहूँ, काल्हि बाजारक सिनेमा हॉलमे आ परसू मंदिरक पछुआड़मे। मिथलेश बाबूकेँ सेहो एहि खबरिकेँ बारेमे एक दिन पता चलि गेल। मिथलेश बाबू आ हुनक पत्नी गणेशकेँ कतेक बेर समझैबाक प्रयास कएलन्हि परञ्च गणेश नहि मानलक। अंतमे मिथलेश बाबू मर्माहत भऽ गेलाह आ गणेशकेँ बिआह कऽ देखलन्हि।

वर्ष धरि घर-गृहस्थी सभ ठीके-ठाक चालि रहल छल। बरखक बादमे घरमे खटपटक सुगबुगाहट होमए लागल। छून् पुतोहु आ सासमे अनबन शुरू होमए लागल, कखनो काजक लेल आ कखनो कोनो वस्तुक लेल। धीरे-धीरे ई अनबन काहियो-काल महाभारतक रूप लऽ लैत छल। घरमे जतऽ शांतिक सरिता बहैत छल ओतऽ आब अशांतिक आगि लागि गेल। लोक चाहे तऽ नमहर बातकेँ परदासँ झाँपि कऽ ओकरा फूसि बना सकैत अछि आ छोट बातमे मिरचाइ लगाकेँ ओकरा बतंगड़ बना सकैत अछि। जाधरि लोक परिवार आ समाजमे सामंजस्यताक जाल नहि बीनत ताधरि सुख-शांतिक कल्पना करब असंभव अछि। रोज-रोज कलहसँ त्रस्त भए मिथलेश बाबूक ब्लडप्रेशर हाई रहए लागल, ओ अस्वस्थ भऽ गेलाह। एक दिनक दिलक दौरा पड़लन्हि ओ कालक गालमे समा गेलाह आ स्वर्गवास भऽ गेलाह। एहि सदमासँ पीड़ित हुनक पत्नी अस्वस्थ रहए लगलीह ओ सेहो एक दिन भगवानक घर विदा भऽ गेलीह।

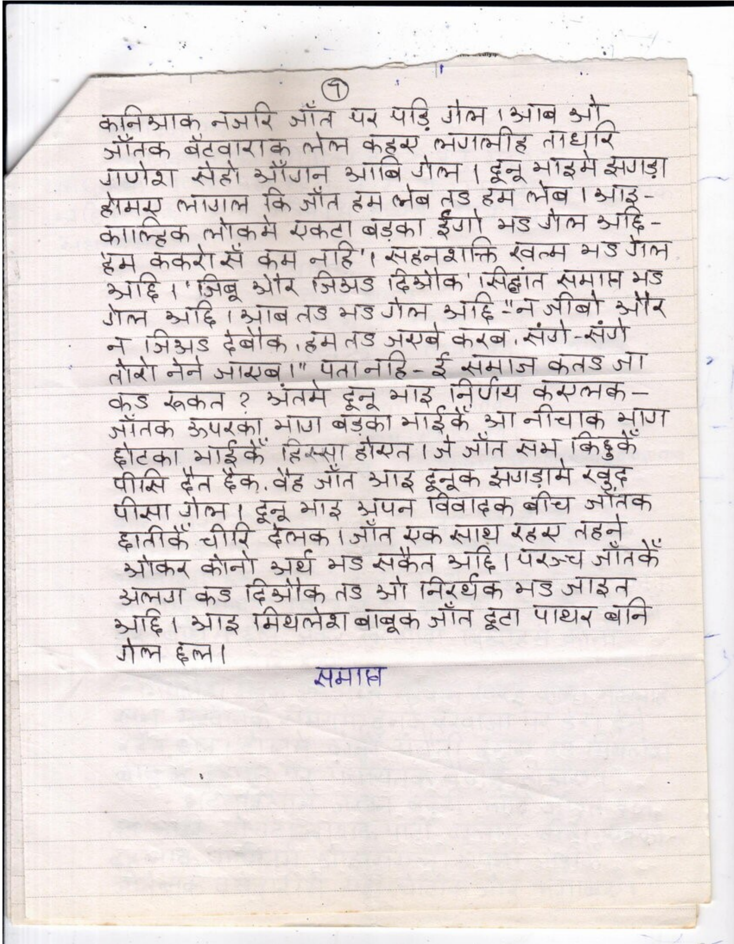
सभ किछु समय पर हुअए तऽ नीक लगैत अछि

(6)

मुदा समयसँ पूर्व होएब आ समयक उपरान्त तऽ लोकक दिलमे कचोट होएत अछि। ईश्वरक नियमक चक्र समयानुकूल घूमैत अछि, सभ किछु नियत समय पर होएत अछि – समय पर सर्दी, समय पर गर्मी आ समय पर बरसात। मुदा हमरा लोकनि स्वार्थसँ वशीभूत भऽ कऽ प्रकृतिकेँ साथ छेड़छाड़ करैत छी। ताहि हेतु परिणाम विपरीत आबि जाइत अछि।

एहि बीच नरेशकेँ एकटा बेटा भऽ गेल आ गणेशकेँ एकटा बेटी जन्म लेलक। आब घरक महाभारत विकराल रूप धारण कऽ लेलक, रोज कोनो-न-कोनो फसाद, पानि माथसँ ऊपर भेल जा रहल छल। दुनू भाइ सेहो एक-दोसरकेँ देखऽ नहि चाहैत छल। अंतमे निर्णय भेल – रवि दिन पाँचटा पंच बजाकऽ सभ किछुक बँटवारा कऽ देल जाए। रवि दिन साँझखन पंच सभ अएलाह – बँटबाक प्रक्रिया शुरू भेल। खेत-पथारि, कलम-गाछी, घर-द्वारि सभ किछुक बँटबारा भऽ गेल। बड़का बेटाकेँ तीनटा घर, छोटका बेटाकेँ तीनटा घर, दलान साझिआ आ एकटा घरक दाम लगाएल गेल। काल्हि तक जे सभ किछु एक जगह छल आइ ओ सभटा दू जगह भऽ गेल, एक-दोसरसँ सभ किछु अलग भऽ गेल। बँटैत-बँटैत राति भऽ गेल आ पंच सभ अपन-अपन घर चालि गेलाह।

दरवाजा परसँ नरेश आँगन आएल, अपना हिस्सामे पड़ल उत्तरबरिया घरक दुहारि पर पड़ल जाँत पर ओकर नजरि पड़ि गेल। एखन धरि जाँतक बँटबारा नहि भेल छल, जाँतपर ककरो नजरि नहि गेल छल। नरेश जाँतकेँ घरमे राखऽ लागल, तखने गणेशक



(7)

कनिआक नजरि जाँत पर पड़ि गेल। आब ओ जाँतक बँटवाराक लेल कहए लगलीह ताधरि गणेश सेहो आँगन आबि गेल। दुनू भाइमे झगड़ा होमए लागल कि जाँत हम लेब तऽ हम लेब। आइ-काल्हिक लोकमे एकटा बड़का ईगो भऽ गेल अछि- हम ककरोसँ कम नाहि'। सहनशक्ति खत्म भऽ गेल अछि। 'जिबू और जिअऽ दिऔक' सिद्धांत समाप्त भऽ गेल अछि। आब तऽ भऽ गेल अछि-"न जीबो और न जिअऽ देबौक, हम तऽ मरबे करब, संगे-संगे तोरो नेने मारब।" पता नहि- ई समाज कतऽ जा कऽ रुकत? अंतमे दुनू भाइ निर्णय करलक- जाँतक ऊपरका भाग बड़का भाईकेँ आ नीचाक भाग छोटका भाईकेँ हिस्सा होएत। जे जाँत सभ किछुकेँ पीसि दैत छैक, वैह जाँत आइ दुनूक झगड़ामे खुद पीसा गेल। दुनू भाइ अपन विवादक बीच जाँतक छातीकेँ चीरि देलक। जाँत एक साथ रहए तहने ओकर कोनो अर्थ भऽ सकैत अछि। परञ्च जाँतकेँ अलग कऽ दिऔक तऽ ओ निरर्थक भऽ जाइत अछि। आइ मिथलेश बाबूक जाँत टूटा पाथर बनि गेल छल।

समाप्त

-शिव शंकर, म.नं.७५, सेक्टर-९, पानी टंकी के निकट, फरीदाबाद, बल्लभगढ़, हरियाणा। ई-पत्र- shivshankar0040@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

९.आशीष अनचिन्हार- [illegible]



आशीष अनचिन्हार

[illegible]

1

अमिताभ बच्चन (Amitabh Bachchan) 2022 मे [illegible] 'कौन बनेगा करोड़पति (Kaun Banega Crorepati)' मे [illegible] "कौन बनेगा करोड़पति" [illegible] अमिताभ बच्चन (Amitabh Bachchan KBC)क [illegible] [illegible]- '[illegible]?' [illegible] ऑप्शन [illegible]।

अमिताभ बच्चन [illegible] ऑप्शन [illegible]- 'A) [illegible], B) [illegible], C) [illegible], D) 2 [illegible].' [illegible] D ऑप्शन [illegible] 2 [illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]- https://www.youtube.com/watch?v=r5JS2fZU70U

2

[illegible] 2021 [illegible]

भूमिका मे पहिल गंगेश गुंजन जीक लिखल आ तकर बाद नामक अपन लेखक छथि। तकराबादो अपन भूमिकामे लिखैत छथि (पृष्ठ-11)- "आब गजलक किछु व्याकरण सेहो बाहर भेल। मुदा किछु विद्वान साहित्य प्रेमीक अभिमत छनि। ताहि सँ हम स्पष्टतः अनभिज्ञ रहल छी। विगत चारि दशक सँ गद्य-पद्यक स विविधता गजल सन विधामे सुयोग भेटल अछि, जेहि मध्य लिखल गजलक आधार बनल अछि। तेँ जँ गजलक व्याकरणक अनुरूप नहि गजल सन अनभिज्ञ हो त ताहि लेल क्षमा चाहब" तकराबादक लिखलमे नहि स्पष्ट अछि जे आ गद्य-पद्यक प्रकाशित गजल पढि बहुत लिखलनि। आ तेँ अभिमानक उत्तरमे कहल पाठक छनि- हुनक जीवनमे भेटल गजलक आदिमे पढि आबक एक कऽ नहि जे नहि सन छी की कि ने"। आ ताहिमे तकराबादो आब तऽ लेल छथि आ बादि उपम जे कऽ सन सहगति नाकमान तऽ लेलनि। । आब हम तँ कहब जे तकराबादो सभमेँ हुना पहिल ने पढल हता कखनो जँ पढल कहितथि तँ हुनक जीवन झा, काशिनाथ सीताराम झा, मधुपजी आदिक गजल पढल कहितनि आ हुनक गजलक व्याकरणमेँ परिचय सहा तन कहितनि। आइयो जे तकराबादो "नाथती मंडन" सन पहिलकामेँ छुटल छथि आ आ अध्ययन कारणाम पछुआयल पडै छथि। गंगेश गुंजनजी अपन भूमिकामे गजल गीत लेल छथि आदिम हुना नव बात ने छी। हम हमरा हुनकामेँ पढल बात पुरबाक अछि जे जीवन झा, काशिनाथ सीताराम झा, मधुपजी आदि सन गजलक व्याकरणक गजल लिखल छथि तकर हिसाब आगा सन

𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒑𑒖𑒪 𑒣𑒿𑒖𑒱𑒞 𑒏𑒯𑒞𑒰 𑒏𑒱 𑒢𑒻 𑒏𑒯𑒞𑒰 (𑒠𑒹𑒐𑒴 𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩-8)। 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒏𑓄 "𑒐𑒝𑓂𑒛-𑒐𑒝𑓂𑒛 𑒐𑒝𑓂𑒛𑒱𑒞 𑒯𑒵𑒠𑒨" 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒧𑒹 𑒄 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒧𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒑𑒖𑒪 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱, 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒂𑒠𑒱𑒧 𑒩𑒠𑒢-𑒏𑒰𑒨𑒱𑒏𑓂𑒨𑒰 𑒂𑒠𑒱 𑒄 𑒑𑒖𑒪𑒏 𑒁𑒢𑒱𑒫𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒞𑒞𑓂𑒫 𑒕𑒻 𑒞𑒏𑒩 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒪 𑒕𑒻। 𑒂 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒧𑒞 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰, 𑒑𑒲𑒞 𑒂 𑒏𑒱 𑒂𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒞𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒨𑒰 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒑𑒖𑒪 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒄 𑒠𑒳𑒮𑒰𑒯𑒮 𑒞𑒰𑒪𑒮 𑒄 𑒣𑒰𑒠𑒱𑒧 𑒩𑒠𑒢 𑒕𑒻 𑒂 𑒩𑒠𑒢𑒏 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒪𑒰 𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒐𑒱।।

3

𑒮𑒢𑒰𑒞𑒢 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒩 𑒏𑒯𑒱𑒞 𑒑𑒖𑒪 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 "𑒫𑒰𑒖𑒫 𑒫𑒢𑒪𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒕𑒻" 𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒧𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒨-- "𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒪 𑒑𑒖𑒪𑒧 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒞𑓁 𑒩𑒴𑒣𑒰 𑒞𑒞𑓂𑒫 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒏𑒩 𑒯𑒧 𑒨𑒟𑒰𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒁𑒢𑒳𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒏𑒋𑒞 𑒕𑒲। 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒁𑒕𑒱, 𑒑𑒖𑒪𑒏 𑒣𑒰𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒦𑒴𑒞, 𑒧𑒞𑒪𑒰, 𑒩𑒠𑒢, 𑒩𑒠𑒲𑒤 𑒂 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒣𑒰𑒪𑒢। 𑒥𑒰𑒞𑒨 𑒩𑒴𑒣𑒰 𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳𑒣𑒩 𑒯𑒧 𑒐𑒴𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒞 𑒕𑒲- 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒄 𑒖𑒹, 𑒯𑒧 𑒧𑒏𑒞𑒰𑒧 𑒞𑒐𑒪𑓂𑒪𑒳𑒮𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒋𑒞 𑒕𑒲 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒄 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒩𑒠𑒢𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒲𑒨 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒏 𑒥𑒯𑒩𑒰 𑒕𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒦𑒴𑒞 𑒏𑒋𑒞 𑒕𑒲। 𑒮𑒹 𑒨𑒠𑒱 𑒏𑒯𑒪𑒼 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒞𑒐𑒪𑓂𑒪𑒳𑒮𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒨𑒢 𑒑𑒖𑒪𑒧 𑒏𑒢𑒰 𑒑𑒳𑒝𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒫𑒵𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻 𑒂 𑒖𑒯𑒰𑒿 𑒡𑒩𑒱 𑒩𑒠𑒢𑒏 𑒮𑒫𑒰𑒪 𑒕𑒻𑒏 𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒪𑒰-𑒑𑒝𑒢𑒰𑒏 𑒕𑒢𑓂𑒠𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒕𑒢𑓂𑒠𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒧 𑒮𑓀𑒞𑒳𑒪𑒢 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒻, 𑒖𑒏𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒯𑒧 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒦𑒴𑒞 𑒏𑒟𑒱𑒞 𑒕𑒲। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒞𑒞𑓂𑒫 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒟𑓂𑒨। 𑒨𑒠𑒱 𑒮𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰𑒧 𑒯𑒧 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒏 𑒏𑒰𑒪𑒖𑒨𑒲 𑒑𑒖𑒪𑒏𑒰𑒩 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒵𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 '𑒐𑒴𑒪'𑒏

शनुगामी ऋी", (यून्न-9)
यादि शंन्नम मन नम-नम शक्कि गुना नू ना नमदव नमयव दम वात कवबा यदिल नूमिकम ङ वदवक शनुयालन यूवक शाधावयव कववाक वात नल ऋ म शादिव की ऋ? कन ऋंद, कन वदव, कन यादन मीन्नव ऋ ङ कि यूवक निम्नित शाधावयव ने ऋ। मन ऋ ङ मालिक ऋंदम नादकँ लिय तँ 13-11 कव शलाव शादिम शाबा नियमक यालन कवया यङत ऋ। तँक्ष ङ किया नूक्ष कदवि ङ दम यूवक शाधावयव गङल लिखैत ऋी तँ मीधे वूमि लिय ङ शा गुविधावानी ऋवि शा शयना दिमावं वाङि वदल ऋवि कवया ङवन कना निम्नित यूवयव वयना दतै तँ शा ऋंनावड्ढ दतै ङना शनुमूय, नादा, मवैया, गङल शादि। गुना ङँ शनिम्नित यूवक शाधावयव वयना दतै तँ शा शाधुनिक कविता, गीत शादि दतै। यादि नूमिकाक मनमँ शायमिङनक वात नूक्ष ङ लदवक शयन कमङवी नुकवाक लल ङुम्नंत नुमाव कव नाम लs ललादा ङुम्नंत नुमाव दिंदी गङलम कम्न कव यविवतन कलाद गुना वदवक मंवा। ङी दाँ, शंकगनीतीय वदवक यालन कवैता दम शनक नाम ङनादवया दन ऋी वयाद ङनादवया मन यादू नाम दs वदल ऋी-

दा गक्ष दे / यीव यवत /-मी दिम्नलनी / नादिया,
क्षम दिमालय / म कक्ष गं / या निकलनी / नादिया

यादि गङल वदव शक्कि 2122 / 2122 / 2122 / 212 शाव शदाँ मन वी गङलकँ ङयवा कs ङाँय मवैत ऋी।

[illegible]
[illegible]

[illegible] 2122 / 2122 / 2122 [illegible]
[illegible]।
[illegible]-

[illegible]
[illegible]

[illegible] 1222 / 1222 / 1222 / 1222 [illegible]
[illegible]।

[illegible]
[illegible]

[illegible] 2122 / 2122 / 2122 / 212 [illegible]

[illegible]

4

[illegible]

5

[illegible]

[illegible]

वजन कहितनि तँ ध्या मानबाक बाध्यता हमरा कहैत मुदा बादन नै छै ई। आबना भिन्नाक्षीक लिहलामेँ कोना बजना गजलमे वनलि ईतै। कुल मिला कऽ हदी तँ नामछनवतीक बजना गजल तँ नहि छनि मुदा गजलमेँ बमी दूना नहि छनि।

6

"सजना सिनदिया" कर लहरक छनि मतीन साजना। यदि याह्रीम गीत बमी थिक ध्या यादन बजना जकरा गजल कहल बेल छै म करा। ध्याना ई मन गजल छैना नै। यदि याह्रीम कुल दू ला नूमिक थिक बहिल थजित थाजद ध्या ब्रामब लहरक कर थयना। छनावतः जहेन नूमिक लहरक थजित थाजद छनि ध्या जपन्यामाकँ गजल कहि सकैत छनि, कोना नारी बात नै। ई ध्यन्या थिक ज। यदि याह्रीम गजल विधाक कोना बजना नै थिक।

7

"स्वर-राग" ई कथित गजल संग्रह धीरेन्द्र प्रेमर्षिक संपादनमे प्रकाशित भेल छनि। यदि याह्रीम नयालक पुना मनदक बजना मन गजलक नाममेँ थायल थिक। यदि पुना मनममेँ किछु पुना मदनती नऽ सकै छलाह मुदा ध्या मन प्रेमर्षिक यमाबल नमम यँमल छनि। थाई हम कि किया पुना मनकँ ई कहि जन्मादित कऽ सकैत छी ज। पल कालि नन ई मन मदनाति करता। मुदा थयन कमजरी नुकबाक थिक तँई पुना मन मदनाति नै करबि बादन बात माजब मादिम्य संग छल हतै। पुना मनकँ मदनाति करबाक बाती मुदा यदि संग्रहम प्रेमर्षि थयन हम, थयन कमजोरीकँ नयालक पुना लहरकयब लादि हन छनि ध्या जन्माद करै छनि ज। पुनाक कमजरी बदन्न हम मुबक्षित बलि जायब।

[illegible]

[illegible]

प्रयान मानसक मालिक मानिकऽ मैथिलीक साँवरम गजलक राडग नहि कहान कहितथि तँ जानि नहि रामदेव, सियाराम झा 'सरस', कलानन्द भट्ट, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ. राजेन्द्र विमल, डॉ. तारानन्द वियोगी, श्यामसुन्दर शशि, डॉ. रामचैतन्य धीरज, जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल', डॉ. धीरेन्द्र धीर, धीरेन्द्र धीरज, जनार्दन ललन, डॉ. देवशङ्कर नवीन, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', डॉ. विभूति आनन्द, डॉ. रामदेव झा, बाबा बैद्यनाथ, डॉ. शेफालिका वर्मा, डॉ. कमलमोहन चुन्नू, डॉ. नरेन्द्र, रामन जनकपुरी, अजित आजाद, तिद्यारवर्द्धमान जयानी, मनोज देव सद्गुरु रचनाकारलोकनि गजल नामसँ किछु लिखलाक मादम कहितथि वा नहि! जँ उल्लिखित साहित्यकारसभक अतिरिक्त नवका रचनाधर्मी गजलक कलम नहि उठौत कहितथि तँ राजीव रञ्जन मिश्र, नवलश्री पङ्कज, दीपनारायण विद्यार्थी, आशिष अनचिन्हार, मैथिल प्रशान्त, प्रदीप पुष्प, अमित मिश्र, कुन्दनकुमार कर्ण, बालमुकुन्द, अनिलाय ठाकुर, सुमित मिश्र आदिसन रचनाकार जानि नहि गजल शब्दक्रम-लयनदिम प्रवृत्त नऽ रहितथि वा नहि।"

हुनकर यदि नमिकक तुकान्तम यादन जमात कर जेना करै छथि जे बिना नियम रचनाकेँ गजल कहबामे यमदत करैत मुक्त छन्दमुक्तीम यतक मादम किछाक न छनि जे ई बिना नाम लिखैन जेना करै छथि। साहित्यम छथि तँ यदि योग्य मादम रहबाक यादी छन्दमुक्ति लगा। नमिकक नामर नागम छन्दमुक्ति

गजलक इतिहासमेँ गलत कहबाक चलन उस्ताद कहैत छथि। जदि प्रसंगमे मैथिली गजलक कते सही मापदण्डक अछि आ उपमिकेसँ कहबाक सही ढंग देखलहुँ। जाहिठा तखन भऽ सकत।

जाहि अतिरिक्त अहाँ नुमिकाम उपमिकेँ लिखि अछि (सूत्र-14)- "मुझे शायरी (बजनानेँ) वाहिते कहबाक कहबाक अधिकार ना मामल्य ककरा नहि भेटैत अछि।" जदि कहबनक की मतलब अछि से देखल नहि बुझाएल। बजनाकेँ किया वाहिते कहला न सकैत मुझे कहना बजनानेँ लहक जबरदस्ती लगल लगा कऽ दबसबाक उस्ताद कहै अछि तँ आदि लगलकेँ वाहिते कहबाक अधिकार समीक्षक-आलोचककेँ जकाँ देल गेल अछि समाजे द्वारा। आ तँइ ई कहबाक कहना संकट ने जे जदि जाहीक बजना गजलक मापदंडचब ने अछि।

आन कलदंड लल उपमिकेसँ निमादि लताद मुना ननिष्पम जद्दन सदनती सुना सतनक आओत भदतै तद्दन दुनकर कतेक नामानिन्नान नहि बजतनि।

8

"विन्नयामक बलिबनीयब" ई कहित गजल संग्रह अनि अछित आजद कबा जदि जाहीम कहना नुमिक ने अछि। आन लाकक कहित गजलयब लीदया बला, संग्रहम नुमिक लीदया बला अछितकी अयन संग्रहम कहना नुमिक किया न देलाद स बात जँ गजलक नामयब किछुआ लीदि देवया बला लाक सन बूझि जया तँ आधा समस्या आदीयाम देवा नऽ जतै। जदि संग्रह बजना सन सता गजल ने अछि।

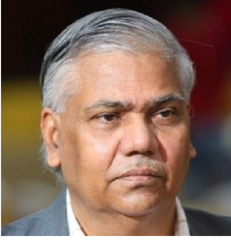
9

हम साहित्यकार केहन छी से व्यक्तिगत तौरपर हमरा कहब आसान कि बकवाद बयनासँ निष्कासित नै छथि। सहिना आलोचक तौरपर हम आलोचना सभकेँ समेटल छी। हमरा निष्कासित करब साहित्य ओहन कि कहब निर्धारक नामपर हम समाजक अधिकृत छी। ग्रहण कएनिहारकेँ पुरस्कार लेल निर्धारक नियम संग सम्बन्ध करार अधिकृत छी। उपयोग ओतए आगाँ ओतए लेखक केर नाम हम सभलेल स सत ग्रहण कएनिहार पुरस्कार लेल हम समाजक छथि। आब अवलम्ब-सब करबा छै तँ कहन न कहना करबा कष्ट दिमागेँ नीक एव करतै, किन्तु आँति नीक लगाव करतै पुना तकर नाम सहजल त्या कियाक? कविता आदि लिख नाम ओहन नियम कर पालन कयित नै छी तखन ई सहजल कहना? नमहर-नमहर गुणिक लिखल अकबा पुना ओँ आबे आँति आदिम ग्रहण कएनिहारक कारण नीचि एल अगा तँ सहन छोड छै ओ कहना पाठक कि कहना आलोचक लेखककेँ आँसी लगा रहत। पुना ओँ कृ सत गहिना हम समाधित बहता तँ कहना न कहना आलोचक दिनक सतकेँ नयोत बहत, ई गहिना बकाब करैत बहता। लेखक ग्रहण करनिहारकेँ मानहानिक करैत बयना नीचेबि कृ बसी कृमानकाब ई मादमी कहु रहतै।
सहजल नियम आदि सत लल छै तँ आबक बृत्त सता सत लल छी। पुना बृत्तक उपयोग बयाद कऽ सबैया छै कि ग्रहणामित छथि। कोनो आलसी लोक लल बृत्त की ई नियम की?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓔.𑓖.𑒛𑒰 𑒖𑒱𑒨𑒰𑒅𑒩 𑒩𑒯𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒰𑒤𑒩𑒲- 𑓔 𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒪 𑒑𑒖𑒪

𑓔..𑒩𑒰𑒖𑒹𑒬 𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒏𑒯𑒴, 𑒖𑒨𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩𑒏 𑒪𑒪𑒢𑒰?



राज किशोर मिश्र, सेवानिवृत्त वरीय जेनरल मैनेजर (रि०), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- [illegible] डीह, पो. [illegible], मधुबनी

[illegible] ?

[illegible],

[illegible] मँ,
[illegible] ,
[illegible] मँ।
मँ

[illegible]
[illegible] ?

[illegible] , [illegible] ,
[illegible] ?

[illegible],
[illegible] , [illegible],

𑒧𑒹𑒒 𑒢𑒱 𑒥𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒞𑒪, 𑒏𑒹𑒪 𑒏𑒞 '?
𑒥𑒢𑒧𑒨, 𑒯𑒹𑒞 𑒡𑒰 𑒢 𑒧 𑒥𑓂𑒩𑒰 𑒑𑒰।

𑒏𑒰𑒯𑒱 𑒪𑒱 𑒮𑒰, 𑒮𑓂𑒪𑒹 𑒏𑒠𑒢 𑒞𑒪?
𑒅𑒪𑒥𑒰 𑒠𑒏 𑒧𑒢𑒮𑒰 𑒞𑒰𑓀 𑒞, 𑒢𑒠𑒥𑒰 ,
𑒏𑒱 𑒢𑒏 𑒏𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱 ? 𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱 ?

𑒏𑒯𑒴, 𑒅𑒒𑒥𑒰 𑒑 𑒏𑒱 𑒧𑒏𑓂𑒏 𑒏𑒏𑒥𑒰 ?

𑒨𑒴𑒥 𑒏 𑒪𑒏 𑒢𑒲 𑒏 𑒏𑒞𑒏 ,
𑒯𑒴𑒪𑒪 𑒅 𑒮𑒞 𑒧𑒱𑒪𑒱 𑒥𑒢𑒧𑒥𑒰 ,

𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒴𑒧𑒰 𑒮𑒞 𑒧𑒱𑒪𑒱 , 𑒏𑒱 𑒢𑒏 𑒏𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱 ,

𑒏𑒯𑒴 ,𑒅𑒒𑒥𑒰 𑒑 𑒏𑒱 𑒧𑒏𑓂𑒏 𑒏𑒏𑒥𑒰 ?

𑒞𑒹𑒥𑒰𑓀 𑒏𑒰 𑒅𑒧𑒲 𑒢𑒏 𑒧𑒅𑒰𑒥𑒴𑒥 𑒧,
𑒅𑒧𑒥𑒰 𑒏𑒲 𑒏𑒹𑒞 '𑒥𑒅𑒪 𑒥𑒠𑒥𑒰 ,
𑒏𑒯𑒴, 𑒅𑒒𑒥𑒰 𑒑 𑒏𑒱 𑒧𑒏𑓂𑒏 𑒏𑒏𑒥𑒰 ?

𑒥𑒴𑒧𑓂𑒧𑒲 𑒑𑒰 𑒥 𑒠𑒥 𑒧𑒰𑒧 𑒏𑒼 𑒒𑒱 ,
𑒧𑒠𑒢 𑒧𑒴𑓀 𑒏𑒹𑒥, 𑒞𑒰𑓀 𑒏𑒰-𑒥𑒠𑒥𑒰
𑒏𑒯𑒴, 𑒅𑒒𑒥𑒰 𑒑 𑒏𑒱 𑒧𑒏𑓂𑒏 𑒏𑒏𑒥𑒰 ?

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ?

[illegible]

[illegible] ,
[illegible] ?
[illegible] ?

[illegible]
[illegible] ,
[illegible] ?

[illegible]?
[illegible]
[illegible] ?
[illegible]

[illegible] ,
[illegible] ?
[illegible] ?

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒘𑒰𑒅।

९.९.शिव कुमार झा टिल्लू - ९ टा पद्य

**शिव कुमार झा टिल्लू**

९ टा पद्य

१

गुरुदेवा'क कम्बल स

वशिष्ठत रामचन्द्र केर छल
धर्म'सँ सनातन कहाल छल
मूरति नै पूजल गुरु -
नरहास गोस्वामि केर ललकार छल !
शैव नाना वैष्णव शाक्तं छल
दुराकृत नै ध्यान तक वज्जन सिद्धांत छल
तखन जनमल सीताक धरती पर
बनला साती स्वर्णरा गुरुदेवा क कोढि'सँ
रोकला जिलक ..
जाहि साती स साल सामान ताला'स थानि
शारक कम्बल स साधि ढलक ध्यान केर कुसुम

बात की छल ? हम जनैथि जगन्नाथ
सनातन दर्शन कहलकनि हम ठिकलक नै
अध्याय छथि - सनातन कर धर्मक उपसनाध्याय
गुरु पढ़ेन मात्र दर्शन आ बौद्धिक लोभ मात्र कर
विषय छ बनि गेल छथि
बचौनी क टहल छल लोभक छटाँ
माथा भरल छथि !!!!!
कंठक धाबन टहल सघन छीटपर
कृष्णा नाचक नाच'सँ नित सृष्टि छनि
जनित साधु सन कामिसन गामक बिधु जन -जननी लालनि

२

अनुक्रम

आदलि भरल झलहुँ दुगीतक डालबाबी'स
संगविचना फूल कर सुगंधक आनंद लेत
आवि दुआ गेल -पकला गीत !
माथ' लगलहुँ विषय- विमर्श
कबी'पर लिखल जगा..?
कतहु बाजिक ककवास त' कना'बास
सावधान सावधानक आनंद
तुकबंदी मिलान कबैत भरलहुँ
लिखि लिखि क' पन्ना भाउत भरलहुँ
नीक'सँ नीक बजवाक दुआस छ झल
कि सजक पनपना उगल दद

𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒪 𑒧𑒰𑒕𑒥𑒏 𑒮𑒰𑒨𑒢
𑒕'𑒥'𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒢 𑒑𑒨𑒟𑓂𑒨𑒰𑓀𑒞
𑒏𑒠𑒪𑒏 𑒠𑒲𑒨𑒰 -𑒮𑒰𑒕𑒱 𑒢 𑒏𑒱𑒨𑒰
𑒨𑒰𑒥 𑒪𑒱𑒠' 𑒪𑒑𑒪𑒠𑒳𑒿 -- 𑒑𑒢𑒳𑒏𑒰𑓀𑒞

𑓙

𑒑𑒢𑒱𑒥𑒪 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 (𑒑𑒲𑒞)

𑒠𑒲𑒞𑒪 𑒕𑒰 𑒨𑒰𑒥 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒏' 𑒑𑒰𑒥𑒨 𑒑𑒰𑒏𑒢 𑒮𑓀𑒑'𑒧 𑒢𑒲𑒞𑒲 𑒑𑒨𑒢
𑒣𑒪𑒴 𑒧𑒠𑒲 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒪'𑒪 𑒢𑒹𑒠𑒥 𑒥𑒹𑒪𑒥 𑒕𑒱𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒞𑒲 𑒑𑒨𑒢 !
𑒣𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒣𑒢𑒰𑒏𑒢 𑒠𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒠𑒰𑒥𑒱 𑒧𑒰𑒨 𑒮𑒱𑒢𑒠𑒏 𑒕𑓀𑒢𑒰 𑒑𑒨𑒢
𑒣𑒪𑒴 𑒢𑒰𑒨𑒮𑓀𑒑 𑒨𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒢𑒥𑒹 𑒕 𑒥𑒱𑒮𑒥𑒪 𑒑𑒰 𑒢𑓀𑒢𑒰 𑒑𑒨𑒢
𑒠𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒞𑒿 𑒢𑒰𑒕 𑒠𑒰𑒕 𑒮𑒥𑒱 𑒏𑒠𑒥𑒱 𑒕 𑒨𑒰𑒞𑒲 𑒥𑒼𑒢𑒲 𑒑𑒨𑒢 !
𑒮𑒳𑒢 𑒥 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒏𑒱𑒑𑒰 𑒏𑒢𑒹 𑒮𑓀 𑒕 𑒥𑒹𑒪𑓀 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒢𑒲
𑒕𑒰𑒕𑒰𑒧𑒏 𑒑𑒠𑒱𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒞𑒰𑒏' 𑒏𑒠𑒥𑒱 𑒠𑒧𑒥 𑒮𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒕𑒱𑒢𑓂𑒢𑒲
𑒨𑒰𑒠𑒱𑒥𑒰𑓀 𑒥𑒠𑒳𑒑𑒰𑒧𑒱𑒢 𑒥𑒢𑒱 𑒥𑒰𑒪𑒠𑒳𑒿 𑒑𑒰𑓀𑒕𑒳𑒥 𑒏𑒥𑒧 𑒑𑒳𑒪𑒼𑒞𑒲 𑒑𑒨𑒢 !
𑒧𑒰𑒑𑒳𑒧𑒰𑒨 𑒢𑒠𑒱 𑒏𑒱𑒥𑒱𑒏 𑒡𑒰𑒨 𑒮𑒥𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒨𑒥 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒩𑒰𑒥 𑒑𑒨𑒢
𑒠'𑒧 𑒮𑒴𑒞𑒪𑒱 𑒮𑒲 𑒑𑒨𑒢 𑒮𑒕𑒨𑒥 𑒨𑒰𑒠 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒱 𑒢𑒰𑒥 𑒑𑒨𑒢
𑒠 𑒏𑒱𑒢𑒥 𑒕𑒲𑒮𑓂𑒩𑒥 𑒥𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒪𑒾 𑒑𑒰𑒠𑒱𑒥𑒰𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒧 𑒞𑒱𑒪𑒼𑒞𑒲 𑒑𑒨𑒢

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒥𑒢𑓂𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒑𑒨𑒢

𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓙.𑓙.𑒧𑒧𑒞𑒰 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲- 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢

**ममता कुमारी**

मिथिला दर्शन

हम मिथिला के वासी ,

बाजब हम्मर मैथिली अछी।

मंडन मिश्र के आंगन में भारती ,

शंकराचार्य के हरौलन अछी।

विद्यापति लेल जहां महादेव ,

उगना बनी ऐला।

एहन मिथिला गाम हम्मर ,

जहां सीता मां जन्म लेला।

थानेश्वर , कुशेश्वर अछी ,

बाबा के धाम ।

उच्चैठ, श्यामा आ अहिल्या ,

माता के स्थान ।

माछ, दही , पान, मखान ,

अछी भोजन प्रधान।

पाग, खराम से होई छइ ,

हम्मर अप्पन पहचान।

कोशी , कमला , बलान बहै ,

झिझरी , कज्री , सामा गीत।

मधुबनी पेंटिंग विश्वविख्यात ,

आ जाट - जट्टीन खेल।

मिथिला हम्मर जन्मभूमि ,

ई हम्मर पहचान अछी।

सदीखन मिथिला आगु बडा,

मनक इच्छा प्रधान अछी।

समता कुमारी

शिक्षिका, समस्तीपुर, बिहार।

।

-समता कुमारी, शिक्षिका, समस्तीपुर, बिहार।

ई रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

९.७.डा जियाउर रहमान जाफरी- ९ टा शाइर गजल

**डा जियाउर रहमान जाफरी**

९ टा शाइर गजल

१

शहर हुनक कँय मयार
कबर मुहा नहि हुनक दियार

बाधा बोनी जड़ल बदल मटि
जहाँ य वैमल नंदकुमार

बरहा म नहि मानी तनिक
की प्रकृति क स्वरदार

कबल हमहीं मैथिली बाहर
कनि कबं त महाँ निदार

सूदक दिल्ली की बाहेत मटि
बाड बहौत मटि नरमंदार

हमहुँ बाबी हमहुँ बागी

𑒮𑒠𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒏𑒲 𑒑𑒣𑓂𑒣𑒰𑒖𑒰𑒩

𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒖𑒯𑒱 𑒯𑒧 𑒞𑒢𑒱𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒪𑒪
𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮 𑒏𑒯𑒳 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩

𑓒

𑒯𑒧 𑒫𑒰𑒘𑓂𑒕𑒱𑒞 𑒏𑒲 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒹𑒪
𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒧𑒳𑒞 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒹𑒪

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒲𑒔𑒲𑒢 𑒏𑒴𑒮𑒹𑒞 𑒮𑒏𑓂𑒏𑒱
𑒕𑒱𑒢 𑒮 𑒚𑒴𑒚 𑒮𑓀𑒡𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒹𑒪

𑒩𑒼𑒏 𑒮𑒳𑒢 𑒮 𑒯𑒧 𑒧𑒰𑒢𑒻 𑒏𑒲
𑒮𑓀𑒞𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒹𑒪

𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒧 𑒍 𑒐𑒼𑒏𑓂𑒏𑒞
𑒥𑒢𑒪𑒱 𑒍𑒏𑓂𑒏𑒞 𑒚𑓀𑒏𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒹𑒪

𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒏 𑒯𑒧 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒏𑒲
𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰, 𑒕𑒢, 𑒮𑓀𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒹𑒪

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒰𑒢𑒱 𑒮𑒯𑒰𑒿 𑒢𑓀𑒢𑒹𑒞 𑒏𑒲
𑒞' 𑒍𑒏𑓂𑒏𑒞 𑒮𑒯𑒢𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒹𑒪

𑒏𑓀𑒢𑒰 𑒠𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒢𑒠𑒱 𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒥𑒠𑒪𑒏
𑒨𑒰𑒨𑒲 𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒑𑒠𑓂𑒨

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲- 𑒖𑒱𑒞𑒰𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒖𑒏𑒩 𑒯𑒱𑓀𑒠𑒲-𑒅𑒩𑓂𑒠𑒴𑒧 𑒑𑒖𑒪 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒥𑒪𑒰 𑒞𑒏𑒩 𑒠𑒴𑒖𑒰 𑒥𑒯𑒩-𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒠𑓂𑒠𑒹 𑒥𑒰𑒢𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧 𑒑𑒖𑒪𑒧 𑒥𑒯𑒩 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒻𑒞। 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒩𑒰𑒯𑒞𑒏 𑒯𑒱𑓀𑒠𑒲 𑒑𑒖𑒪 𑒠𑒴𑒖𑒰। 𑒖𑒹 𑒑𑒖𑒪𑒧 𑓑𑓔𑓑-𑓑𑓔 𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒪𑒢 𑒏𑒢 𑒥𑒰𑒢𑒱 𑒠𑒩𑒏 𑒥𑒰𑓁𑒞𑒱𑒧 𑒮𑒰 𑒏𑒰𑒤𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒢𑒱 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒕𑒻।



- डा जियाउर रहमान जाफरी, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, मिर्जा गालिब कॉलेज, गया बिहार, 823001, 9934847941

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

६.संस्कृत मिथिला

६.१.डा. दीपिका- पश्यमादित्यमनो विलासः (द्वितीयाङ्कनामः)

६.३. डा. शशिधर- कथमादित्यचन्द्रो विलासः (द्वितीयाङ्कनामः)

कथमादित्यचन्द्रो विलासः

(द्वितीयाङ्कनामः)



डा. दीपिका

(सहायकाध्यापिका वदवती-महाविद्यालयस्य प्राध्यापिका च)

चम्पूसाहित्यजगति आचार्यत्रिविक्रमभट्टस्य नलचम्पू-नामधेयः ग्रन्थः प्रथमं चम्पूकाव्यम् अस्ति इति प्रथितः एव। दमयन्तीकथाम् अस्य ग्रन्थस्य रचना कृता। अस्मिन् ग्रन्थे मूलतः त्रिविक्रमभट्टरचिताः सप्त-उच्छ्वासाः वर्तन्ते। एवं जनश्रुतिः वर्तते यत् आचार्यत्रिविक्रमभट्टः वाग्देवी कृपावशात् सप्त-उच्छ्वासमयग्रन्थमेव लेखनं कृतवान्। अतः ग्रन्थोऽयम् अपूर्णः।

तत्र प्रथम उच्छ्वासे विविधविषयाणां वर्णनं वर्तते। आदौ आर्हस्य पञ्चविंशतिश्लोकाः वर्तन्ते। यत्र श्लोकेषु शिवस्य स्तवनं वर्तते। एवमेव कामन्दकस्य वर्णनं, सरस्वत्याः स्तवनं, काव्यवैशिष्ट्यं, कुकविनिन्दा, दुर्जननिन्दा, विद्वज्जनानां वन्दना, सज्जनदुर्जनयोः पार्थक्यम्, आदिकवि स्तुतिः, वेदव्यासस्तुतिः, महाभारतकथावर्णनं, बाणभट्टगुणाढ्ययोः प्रशंसा, संगीतश्लेषवैशिष्ट्यादीनां विवरणम् एषु श्लोकेषु वर्णितवान् अस्ति आचार्यः।

एवमेव गद्यप्रवाहे मध्ये-मध्ये पद्यप्रयोगद्वारा कविवंशादिवर्णनम्, आश्रमवर्णनं, निषधापुरीवर्णनं, नलवर्णनं,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

साधुस्ववर्णवर्णनानाम्, शास्त्रार्थतत्त्वमार्गमार्गानुरक्तानामाश्रयभूता नाम नगरी।

ग्रामावतस्य प्रश्नः पीठस्थाः इत्यादि वर्णनम् यत्नेन समीचीनतया कृतमिद-

यस्मिन्नवनतधर्मकर्मप्रसन्नतानां समस्तशास्त्राधिष्ठितकराः पुरुषार्थप्रतिष्ठितपुरुषाः सकलसंसारप्रसिद्धाः प्रजाः तथाहि- कुत्रापि गोष्ठीकलापेषु, ग्रामान्तरवाटी वैयाकरणेषु, संन्यासिमठेषु, पदसंस्कारशिक्षितैःशास्त्रेषु, ततविकसवादः सांख्येषु, कुशास्त्रिषु, गुणवृत्तिवर्णनाभिषु, गलपत्रा सन्ध्यासु, गर्भकथानां प्रवर्तवर्णनाभिषु, तलदर्शनप्रबन्धप्रतिकथनेषु, दृश्यते न प्रश्नः ॥ यत्र वसुधायोषिताः सम्पन्ना इव ग्रामाः, तुङ्गसकलकलत्रवनाः सर्वत्र नगा इव नगरप्रसन्नाः, सरोवरसङ्गतानि नूपुराणीव पुराणि, सम्पन्नतागाः पुरस्त्रिया इव जनाः, स्त्रियालयपनसानि यौवनानीव वनानि, विस्मयोदितागस्त्या इव वाटिकाः, निवृत्तिस्थानानि मुक्तलताभिरञ्जि कृतसम्पत्ति, जनाधिवासिताः पुष्पधन्वा इवाप्रसादामृतपानागाः, कुपितकपिकुलाकुलिता लक्ष्मणवाटिका इव तरङ्गसङ्कुलनवायाः कृपाः, दीनवान्धवाः सरित इव गावः, सतीव्रतापन्नायाः सूर्यस्तुतय इव कुलस्त्रियः ॥ यत्र च सनातनसमानसरस्वतीसम्पन्नपुरुषप्रतिभा विद्वांसः याज्ञिकाः कल्पवृक्षा इव दृश्यमानवन्दनीयाः कुलानाः।

किं बहुना।

नास्ति सा नगरी यत्र न वापी न सुधाधवला।

दृश्यते न च यत्र स्त्री नवापीनपयोधरा॥

मयि च

तवापि यात्वान बृहन्नारा विरुद्धवाः।

ऊर्ध्वम् न तु लोकस्य कदापि न विरुद्धवाः॥

उत्थापनं न केवलं तत्कालीनतायाः बोनिष्कायं

युक्तोति। ममसामामपिकतास्यस्य निनिमायाम मयि उत्थापनातल यत्र कृतं

तत्रैव इति निश्चयम्। मनुस्मृतेः

दैवः पुण्यतमाह्वनः कस्यामी न बिभ्या तवता।

युक्ताऽनुक्तान्तसंयनेन्या उनोपिब याउनेः॥

(मनुस्मृति)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।


Videha
e-Learning
Gajendra Thakur

